RNI No. : UPHIN-2009/29369

डाक पंजीकरण : KANPUR HO/002/2022-24
प्रधान डाकघर कानपुर-डाक प्रेषण दिनांक 29/30

वार्षिक सदस्यता शुल्क 100/-

# द्रविड़ भारत

www.dbindia.org.in

सामाजिक परिवर्तन का मासिक पत्र

नवम्बर–2023 | वर्ष – 15 | अंक : 10 | मूल्य : 5/-

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और दबायें।

## सम्पादकीय

RNI No. : UPHIN-2009/29369

**संपादक : उमेश्वरी देवी, मो.: 9005204074**
**संरक्षक मण्डल : मा. रामदीन अहिरवार (महोबा), मा. राम अवतार चौधरी (सहा.अभि. जलकल विभाग), मा. छविलाल वर्मा (चरखारी), मा. हरिनाथ राम (दिल्ली), मनीष कुमार मो. 9415053621**
**राज्य ब्यूरो प्रमुख उत्तर प्रदेश :**
**सुनील कुमार, ढेलवा, गाजीपुर (उ.प्र.), मो.: 9935363730, 9170836363**
**योगेन्द्र कुमार (ब्यूरो चीफ चित्रकूट मण्डल) मो.: 8299162841**
**हमीरपुर ब्यूरो प्रमुख – रघुवर प्रसाद, मो.: 9793739030**
**क्षेत्रीय सम्पादकीय कार्यालय :**
**40/69, डी–5, श्यामलाल का हाता, परेड, कानपुर (उ.प्र.), मो. : 8756157631**
**ब्यूरो प्रमुख लखनऊ मण्डल :**
**राजकुमार, उन्नाव**
**मो.: 9889273743, 9392660070**
**हरियाणा राज्य :**
**डा. रमेश रंगा, ग्राम–सराय, औरंगाबाद, पो.–बहादुरगढ़,जिला–झज्जर (हरियाणा),09416347052**
**कानूनी सलाहकार : एड. रामप्रकाश अहिरवार, एड. यू.के. यादव, मोती लाल वर्मा, एड. विजय बहादुर सिंह राजपूत, एड. रमाकान्त धुरिया, रामऔतार वर्मा, एड. सुशील कुमार, कानपुर**
**मध्य प्रदेश राज्य : पुष्पेन्द्र कुमार**
**कार्यालय : ग्रा. व पो.–रामटौरिया, जिला–छतरपुर**
**छत्तीसगढ़ राज्य : ब्यूरो प्रमुख**
**रमा गजभिये, मो.: 7828273934**
**दिल्ली प्रदेश : C/o अनिल कुमार कनौजिया C-260, हर्ष विहार, हरिनगर एक्सटेंशन पार्ट–III, बदरपुर, नई दिल्ली–44, मो. : 09540552317**
**राजस्थान राज्य : रघुनाथ बौद्ध, श्याम रघु फुट वियर, दुकान नं.–1, गणेश मार्केट, पुलिस चौकी के सामने, अलवर, जिला–अलवर–301001, मो. : 09887512360, 0144–3201516**
**बाबूलाल बौद्ध, अलवर, मो.–08058198233**
**संपादकीय/विज्ञापन प्रसार/पंजीकृत कार्यालय :**
**ग्रा व पो.–रिवई (सुनैचा), जिला–महोबा (उ.प्र.)**
**मो. : 9005204074, 8756157631**
**E-mail : dravinbharat1@gmail.com**
**प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वामी**
**उमेश्वरी देवी द्वारा ग्रा. व पो.–रिवई (सुनैचा), जिला महोबा से प्रकाशित व श्रेय ऑफसेट प्रा. लि., 109/406, नेहरू नगर, कानपुर, 84/1, बी, फजलगंज, कानपुर से मुद्रित**

प्रकाशित पत्रिका में प्रकाशित लेख, सामग्री, में संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। इसमें किसी भी प्रकार का दावा या विचार मान्य नहीं होगा। लेख के विवादित होने पर लेखक ही उत्तरदायी होगा समस्त विवादों का निपटारा महोबा न्यायालय में होगा पत्रिका का संपादन एवं संचालन पूर्णतयः अवैतनिक एवं अव्यवसायिक है।

**मिशन को बढ़ाने के लिए सहयोग करें –**
**भारतीय स्टेट बैंक, शाखा-पी.पी.एन. मार्केट, कानपुर**
**खाता सं.-33496621020 • IFSC CODE-SBIN0001784**

# धर्म एवं जाति चेतना के राजनीतिकरण का कारण

जबसे भारतीय राजनीति में धर्म और जाति का तत्व प्रभावी हुआ है, धर्मनिरपेक्षतावादी दलों व बुद्धिजीवियों को लग रहा है देश के आर्थिक मुद्दे पृष्ठ में धकेल दिए गए हैं। वे बार–बार चुनावों में धर्म व जाति के नाम पर राजनीति करने वाले दलों पर आरोप लगाते हैं कि ये दाल रोटी, कपड़ा, मकान, स्वास्थ्य और बेरोजगारी जैसी आधारभूत समस्याओं की अनदेखी कर राष्ट्र को महज धर्म व जाति के नाम पर बांटने का खेल कर रहे हैं। पिछले दिनों चार राज्यों के विधानसभा चुनावों के दौरान, विशेषकर उत्तर प्रदेश में ये आरोप बार–बार दोहराए गए जिनका सिलसिला चुनाव परिणाम आने के बाद भी थोड़ा–बहुत जारी है।

निश्चिय ही आर्थिक मुद्दों के प्रति इतनी गहरी चिंता व्यक्त करने के लिए धर्मनिरपेक्षता, जो मूलतः साम्यवादी और समाजवादी व गांधीवादी विचारधारा से हैं, साधुवाद के पात्र हैं। लेकिन उनका यह कहना अदूरदर्शिता का सूचक है कि धार्मिक व जातीय चेतना के राजनीतिकरण के आर्थिक मुद्दों की उपेक्षा हुई है। वास्तव में पिछले एक दशक से धार्मिक व जातीय चेतना का तो तीव्र राजनीतिकरण हुआ है, उसके पीछे अतीत की तुलना में आर्थिक पहलू को ज्यादा से ज्यादा वरीयता देने की मंशा काम कर रही है। राष्ट्र के संसाधनों पर कब्जा जमाने की तीव्र ललक ने ही आधुनिक भारत के दो सर्वश्रेष्ठ राजनीतिक प्रतिभाओं को धार्मिक और जातीय चेतना के राजनीतिक का सूत्र रचने के लिए प्रेरित किया था। यही कारण है भारत की राजनीति में मौजूदा सत्ता संघर्ष परोक्ष रूप से डॉ० हेडगेवार और कांशीराम की विचारधारा का संघर्ष बनकर रह गया है।

धार्मिक चेतना के राजनीतिक के सूत्र रचयिता की दूरदृष्टि समकालीन नेताओं से काफी ज्यादा थी। यही कारण है कि उन्होंने आजादी की लड़ाई में अपनी ऊर्जा को व्यय करना मुनासिब नहीं समझा। उन्होंने महसूस कर लिया था पूरी तरह निचोड़ लिए जाने के बाद भारत खुद अंग्रेजों के लिए बोझ बन गया है। अतः निकट भविष्य में अग्रेंज खुद ही भारत छोड़कर चले जाएंगे। ऐसे में उन्होंने आजाद भारत में अपने समाज के लिए सत्ता की रणनीति बनाने में खुद को व्यस्त किया। 1925 में आरएसएस की स्थापना के कुछ वर्षों पूर्व सात समंदर पार इंग्लैड में एडल्ट फ्रेंचाइज (वयस्क मताधिकार) आंदोलन सफल हो चुका था। ऐसे में उन्हें यह कल्पना करने में दिक्कत नहीं हुई कि जब स्वाधीन भारत में अंग्रेजों की ईजाद की हुई संसदीय प्रणाली लागू होगी, तब इंग्लैण्ड से शुरू हुआ वयस्क मताधिकार यहां भी लागू होगा। वैसे में विशिष्टजन ही नहीं, भूखे अधनंगे दलित–पिछड़ों को भी वोट देने, अपना प्रतिनिधि चुनने का अवसर मिलेगा। तब वे चाहे और कुछ करें न करें तिलक, नेहरू इत्यादि विशिष्ट ब्राह्मण विद्वानों ने जिन्हे विदेशी (आर्य) प्रमाणित किया है, उन्हें तो वोट नहीं देंगे। इसी चिंता ने उन्हें तत्कालीन ब्राह्मण विद्वानों के विपरीत आर्य समाज की जगह हिंदू–संस्कृति के नाम पर आंदोलन चला कर 'विशाल हिंदू समाज' बनाने का सूत्र रचने को विवश किया। उन्होंने भारतीय समाज के गहन अध्ययन के बाद यह भलीभांति जान लिया–जब हिंदू–धर्म–संस्कृति के नाम पर आंदोलन खड़ा किया जाएगा तो परिणामतः हिंदुओं का जो ध्रुवीकरण होगा, उससे विशाल हिंदू समाज बनेगा जिसका नेता ब्राह्मण होगा ही होगा।

डॉ० हेडगेवार से यह गुरूमंत्र पाकर संघ लंबे अरसे से चुपचाप काम करता रहा। लेकिन मंडल रिपोर्ट के बाद जब दलित–पिछड़ों के हाथ में सत्ता आने का आसार दिखा तब संघ ने राम जन्मभूमि उद्धार के नाम पर आजाद भारत का सबसे बड़ा आंदोलन (अटल बिहारी वाजपेयी के अनुसार) खड़ा कर दिया। परिणाम आज सामने है। स्वयं ब्राह्मण अटल जी अत्यन्त अल्पजन समाज के सदस्य होकर भी एक नहीं तीन बार देश की बागडोर थाम चुके हैं।

लोग मानते हैं कि जाति चेतना के राजनीतिकरण के जनक मा. कांशीराम ने महामना फुले, डॉ. आंबेडकर, पेरियार, शाहूजी आदि के विचारों पर अपना बहुजनवाद विकसित किया है। पर मुझे लगता है कि डॉ. हेडगेवार ने उन्हें कम प्रभावित नहीं किया था। सचमुच संघ संस्थापक की दूरदर्शिता ने उन्हें प्रभावित किया था, इसलिए विशाल हिंदू समाज की तर्ज पर बहुजन समाज बनाने के लिए उन्होंने फुले के बहुजन मंत्र को ग्रहण किया। जहां हिंदू–धर्म–संस्कृति के उज्जवल पक्ष से लोगों को उद्वेलित कर डॉ. हेडगेवार ने विशाल हिंदू समाज बनाने की परिकल्पना की थी, वहीं कांशीराम ने हिंदू–धर्म–संस्कृति के अंधेरे पक्ष अर्थात वर्ण–व्यवस्था में सदियों की वंचना, मर्यादाहीनता व गुलामी के आधार पर बहुजन समाज बनाने का काम शुरू किया। संघ की योजना ने कांशीराम को यही सीख दी कि यदि वर्ण–व्यवस्था में वंचित व शोषित जातियों का ध्रुवीकरण कर दिया जाए तो सत्ता की लगाम दलित–पिछड़े– अल्पसंख्यकों के हाथ में आएगी और सत्ता का उपयोग कर ये जातियां राष्ट्र के संसाधनों में अपनी भागीदारी ले लेंगी। अपनी सोच को अमली रूप देने के लिए उन्होंने योजनाबद्ध तरीके से पहले दलितों की जाति चेतना का राजनीतिकरण किया जो धीरे–धीरे पिछड़ों और अल्पसंख्यकों तक प्रसारित हो गई। जाति चेतना के राजनीतिकरण के फलस्वरूप आज प्रायः संपूर्ण आर्यावर्त की राजनीति में वंचित जातियों का प्रभुत्व हो गया है। जाति चेतना के राजनीतिक का तत्व भारतीय राजनीति पर कितना हावी हो गया है, इसकी तस्वीर हाल ही में चार राज्यों में संपन्न हुए विधानसभा चुनावों के परिणाम में देखी जा सकती है। इसमें कुल 650 सीटों में 394 के परिणाम प्रायः जाति आधारित दलों के पक्ष में गए हैं। यह बात और है कि हिंदू धर्म द्वारा खड़ी की गई घृणा की दीवार का अतिक्रमण कर ये जातियां बहुजन समाज बनने में अभी भी नाकाम हैं।

अगर ध्यान से देखा जाए तो भारत का मतदाता धीरे–धीरे धर्म और जाति के दो खानों में सिमटता जा रहा है। लेकिन कुछ विद्वानों को लग रहा है कि निकट भविष्य में भारतीय राजनीति धर्म और जाति के शिकंजे से मुक्त होकर अपने परंपरागत रूप में आ जाएगी। ऐसे लोग निश्चय ही भ्रम के शिकार है। आज ब्राह्मणों के नेतृत्व में जिन 10–15 प्रतिशत, प्रभुजातियों का देश के अर्थतंत्र शिक्षा, स्वास्थ्य, मीडिया, उद्योग एवं वाणिज्य इत्यादि के क्षेत्र में 90 प्रतिशत कब्जा है। उसे बरकरार रखने के लिए उन्हें धर्म की राजनीति से दूर जाना कठिन है। क्योंकि जाति के ध्रवीकरण की आंधी में ब्राह्मण समाज, क्षत्रिय समाज या वैश्य समाज के नाम पर सवर्णों का चुनाव जीतना दुष्कर है। ये तभी जीत सकते हैं जब विशाल हिंदू समाज के अंग के रूप में मुकाबले में उतरें। और सहस्त्रों भागों में बंटा हिंदू समाज तभी एक विशाल समाज बन सकता है, जब धर्म के नाम पर आंदोलन चलाया जाएगा। दूसरी तरफ राष्ट्रीय संसाधनों से वंचित की गई जातियों को अपनी भागीदारी हासिल करने के लिए सत्ता पर कब्जा जमाना आवश्यक है जिसके लिए जाति के नाम पर ध्रुवीकृत होने के सिवाय कोई विकल्प नहीं है। इस मोर्चे पर इनकी जरा–सी भी सुस्ती का लाभ उठाकर साधन सम्पन्न प्रभुजातियां हिन्दू के नाम पर चुनाव जीतकर सत्ता पर काबिज होती रहेंगी। अतः इनकी नाकेबंदी के लिए जाति चेतना के राजनीतिकरण की निरंतरता बनी रहेगी। यही नहीं निकट भविष्य में जो भारत विदेशियों का आर्थिक रूप से गुलाम बनने जा रहा है, उसमें मलाई तो विदेशी ले जायेंगे और जूठन हिन्दुस्तानियों को चाटना है। लेकिन यह जूठन भी उसी को मिलेगी जिसके हाथ में सत्ता रहेगी। अतः जूठन पर कब्जा धार्मिक और जाति चेतना के राजनीतिकरण को और तेज करेगा। ऐसे में आर्थिक कारणों से धार्मिक और जाति चेतना के उभार के कम होने के कोई आसार नहीं हैं। अतः यह मानकर चलना ही श्रेयस्कर होगा कि भविष्य में भी भारतीय राजनीति धर्म और जाति से अभिशप्त रहने के लिए लाचार रहेगी।

**जनसत्ता पत्र रूप में 26 जून 2022**

**साभार : वर्ण व्यवस्था एक वितरण व्यवस्था पेज संख्या 222 से 224 तक**
**एच.एल.दुसाध**

# चमार एवं उपजातियों की अस्मिता

पन्नी लाल निर्मीक

दलित सदियों से ब्राह्मणवादी, सामंतशाही और पूंजीवादी व्यवस्था का शिकार रहा है, उसका सर्वांगीण शोषण हुआ है, शिक्षा से दूर रखा गया, धन संपत्ति सम्मान से वंचित किया गया तथा कर्त्तव्यों के बोझ के नीचे दबा दिया गया और पशुवत जीवन व्यतीत करने को विवश किया गया, इस सब का यदि स्वतंत्र भारत में कोई कारण है तो वह है दलितों में सामाजिक बिखराव जिस कारण आये दिन दलितों पर हमले, अस्मिता का हरण तथा सामूहिक बलात्कार एवं नरसंहार की घटनाएँ होती हैं, उत्तर भारत में बिहार, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश और राजस्थान तथा हरियाणा में दलित उत्पीड़न दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है, क्योंकि एक दूसरे से साथ खड़े नहीं होते।

स्थानीयता के आधार पर पंजाब और हिमाचल का बाल्मीकि समाज अधिक अम्बेडकरवादी है तो वहाँ का चमार रैदासी तथा कोली, डोम, धोबी, बढ़ई, नाई, कुम्हार, हिन्दुवाद का कट्टर समर्थक है। हरियाणा का चमार बाबासाहेब को मानने लगा है किन्तु उत्तरप्रदेश के अम्बेडकर वादियों के साथ जुड़ना भी नहीं चाहता अपनी अलग ढपली बजाना चाहता है पश्चिमी उ.प्र. का जाटव अपने आप को महान अम्बेडकरवादी समझता है यहाँ तक कि बौद्धिस्ट होने का दावा भी करता है किन्तु ब्राह्मणवाद की रीतिरिवाजों को छोड़ना भी नहीं चाहता तथा अन्य दलित जातियों को कम अम्बेडकरवादी और हेय समझता है। महाराष्ट्र का बौद्ध दलित संघर्षों का नेतृत्व और दिशा देता है तथा जी जान से संघर्ष करता है तो वहाँ का चमार मोची, लालबेगी, मातंग तथा अन्य दलित, बौद्धों के साथ में कंधा से कंधा मिलाकर जुझारू रूप से संघर्ष नहीं करता। साथ में यह भी सच है कि महार अपने को बाबासाहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर का वंशज समझकर अन्य दलित जातियों को निकम्मा तथा कम बहादुर समझता है और प्रत्येक सामाजिक संगठन में बिखराव है, उदारता का अभाव है। दलितों में जिनका सबसे अधिक शोषण हुआ है और दलितों के हकों के लिए जिन्होंने संघर्ष किया है तथा आरक्षण के नाम पर जिनका सबसे अधिक दोहन किया गया है उनमें चमार, बाल्मीकि, महार प्रमुख हैं, वैसे सामाजिक स्तर के रूप में तथा मौलिक संरचना की दृष्टि से भी इनमें कोई भेद नहीं है। बड़ी विडंबना है कि इन जातियों की भी असंख्य उपजातियाँ हैं। जाति तो एक ही है परन्तु क्षेत्रीयता, रहन, सहन रीतिविवाज के आधार पर प्रत्येक उपजाति दूरी उपजाति को नीचा समझती है।

चमारों की ही लीजिए लगभग 1956 उपजातियाँ हैं, मुख्यतः उत्तर भारत में चमार, चमाण, चांडौर, जाटव, जाटिया, गुलिया, आहिरवार, धूलिया, रविदासी, आदि आदिधर्मी, जैसवार, कुरील, दोहरे, बैरवा, रेंगर, रेहगड़ चमार–जुलाहा, चमार कौरी, महार, मोची, आदिधर्मी तथा डोम, धानुक, मिहारा, बाल्मीकि, भंगी, मेहतर, लालबेगी, मातंग, चूहडा पता नहीं बाल्मीकि में भी 133 उपजातियाँ है। यही कारण कि जब कभी भी शादी–विवाह या संगठन की बात आती है तो ये जातियाँ सामाजिक रूप से अलग–अलग खेमे में बँट जाती है संगठित नहीं हो पाती हैं बाबासाहेब का नारा सभी देते हैं और अलग–अलग मंच पर राजनैतिक, आर्थिक लाभ केलिए ये सभी जातियाँ बाबासाहेब का नकदीकरण करती हैं किन्तु सामूहिक मंच पर इकट्ठा होने से सभी कतराते हैं। यही कारण है कि जातिगत द्वेष के कारण महाराष्ट्र में महारों के बाबासाहेब, उत्तरप्रदेश, राजस्थान, मध्यप्रदेश, दिल्ली और हरियाणा में जाटव और चमारों के बाबासाहेब पंजाब, हिमाचल में बाल्मीकियों के बाबासाहेब, बिहार में पासियों या पासवानों के बाबासाहेब, यही बिखराव जारी है। अनुसूचित जाति तथा जनजाति के सैकड़ों अन्य जातियाँ हैं, वे ब्राह्मणवाद के पूर्ण शिंकजे में हैं और उनके जातिगत संगठन है वे सामूहिक रूप से अम्बेडकरवादियों का साथ नहीं देती। बाबासाहेब और भगवान बुद्ध के नाम पर तो ये जातियाँ मात्र आरक्षण का लाभ उठा रही हैं संघर्ष के नाम पर तो इनका योगदान नगण्य है। इन जातियों में प्रमुख है खटीक समाज, धोबी समाज, पासी, कोली, नाई, कुम्हार, मीणा नेगी, यादव, अहीर, गूजर, गड़रिया, कहार, गोंड आदि आदि यद्यपि अब इन जातियों के कुछ शिक्षित जागरूक नवयुवक और समझदार लोग बाबासाहेब के मिशन से जुड़ने लगे हैं।

यह बड़ी सुखद स्थिति है कि दलित समाज की सभी जाति और उपजातियों में कुछ युवक वास्तविकता को समझकर बाबासाहेब के मिशन से जुड़ने लगे हैं। यद्यपि अनुसूचित जनजाति और पिछड़ा वर्ग की कुछ जातियाँ तो नाममात्र की दलित हैं केवल आरक्षण भोगी हैं उन्हें हिन्दू समाज में सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक प्रतिष्ठा मिली हुई है, वे बाबासाहेब का नाम लेने में शर्म महसूस करते हैं। हाँ बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश का दलित, पिछड़ा तथा जनजाति का व्यक्ति जागरूक हुआ है और संघर्ष कर रहा है, इसका जीता जागता उदाहरण है बिहार और उत्तर प्रदेश में दलित तथा पिछड़ों की सरकारें बनी हैं। दक्षिण भारत का दलित भी संगठित होकर ब्राह्मणवाद के विरूद्ध संघर्ष करता रहा है, किन्तु उत्तर भाग का दलित हमेशा जाति–उपजाति की श्रेष्ठता के घमंड तथा व्यक्तिगत क्षुद्र लाभ के लिए हमेशा बिखरता रहता है।

चमार जाति निश्चित रूप से अनार्य हैं क्योंकि ऐतिहासिक तथ्यों से पता चलता है कि सिंधु घाटी की सभ्यता के पश्चात भारतीय पर सर्वप्रथम आक्रमण आर्यों ने ही किया था। विश्व की प्राचीनतम सिन्धु घाटी की सभ्यता में वर्ण–व्यवस्था और जाति प्रथा का उल्लेख नहीं मिलता, समाज में स्त्री को समानता और सम्मान प्राप्त था। प्रसिद्ध लेखक, साहित्यकार तथा इतिहासकार मान, नवल वियोगीजी ने अपनी अद्वितीय पुस्तक 'सिंधु घाटी के सृजनकर्ता शूद्र और वाणिक' में अनेकों प्रमाण दिये हैं कि सिंधु घाटी के निवासी वही लोग थे जिन्हें आर्यों ने शूद्र, दस्यु, वैश्य राक्षस और असुर तथा चांडाल कहा है। इतिहास साक्षी है कि भारत के मूल निवासी अनार्य, द्रविड़ या जनजाति लोग थे जो बहुत ही शांत, सभ्य तथा सुसंस्कृत थे। मध्य एशिया, ईरान तथा मंगोलिया से आर्य आये और यहाँ के मूल निवासियों पर आक्रमण किया। आर्य लोग चालाक, छल कपट में निपुण थे जैसा कि आज भी वे दलितों के साथ करते रहते हैं, आर्यों का अनार्यों के साथ सैकड़ों वर्ष तक युद्ध चलता रहा जिन्हें देवासुर या आर्य अनार्य युद्ध के नाम से जाना जाता है। आर्य जीत गये और अनार्य हार गये, दो प्राकर के मूल निवासी थे एक जो बहादूरी से लड़े आर्यों के दाँत खट्टे कर दिये और दूसरे वे जो तटस्थ रहे। आर्यों ने भारत अर्थात् जम्बू दीप पर कब्जा कर लिया अनार्यों को दास बनाया तथा उन्हें दस्यु, राक्षस, दानव, शूद्र, तथा चांडाल और असुर जैसे नामों से संबोधित किया। जिन अनार्यों या द्रविड़ों ने लड़ाई नहीं लड़ी। उन्हें शांति से रहने दिया गया और वर्ण–व्यवस्था तथा जाति प्रथा जैसे कठोर नियम बनाये। कुछ को सछूत शूद्र तथा शक्तिशाली अनार्यों को अछूत शूद्र घोषित किया। सछूत शूद्र से आर्य पानी पी सकते थे तथा चौका तक आना कबूल किया, इनमें यादव, नाई, माली, कुर्मी, गूजर आदि आते हैं। जिन्होंने आर्यों के दाँत खट्टे किये, उनके कारोबार समाप्त कर दिये, बस्तियाँ जला दी गयी, कुचल दिया गया ताकि हजारों साल तक सिर न उठा सकें, अछूत, शूद्रों को गाँव से बाहर बसाया गया, पशुओं का माँस खाने को बाध्य किया गया, झूठन और पुराने कपड़े दिए गये शिक्षा के दरवाजे बन्द कर दिये गये, इनमें चमार, भंगी, रैगड, खटीक, महार, पासी, कुम्हार, कोली किरात आदि आते हैं। आज भी एक कहावत प्रसिद्ध है कि, ''साले मार–मार कर भंगी बना दूंगा।'' इससे सिद्ध होता है कि भारत के मूल निवासियों पर आर्यों ने सुनियोजित ढंग से आक्रमण किया और आज तक दलितों को उसी प्रकार उतपीड़न जारी है। इन्हीं मार्शल अनार्य शूद्रों के वंशज जो यातनाएँ बर्दाशत न कर सके वे जंगलों में चले गये वहीं रहने लगे और आत, भील, नागा, संथाल, गोंड, मीना कजंड आदि आदिवासियों के रूप में जाने जाते हैं।

चमार जाति वास्तव में बृहत समाज है जो उक्त अनार्य समुदाय का सच्चा प्रतिधित्व करती है। सदियों से चमार उन पर थोपे गये पारम्परिक व्यवसायों रीति–रिवाजों को निभाते चले आ रहे हैं। वैसे तो भारत की समस्त अछूत जातियाँ मूलतः चमार जाति से ही सम्बन्धित है। किन्तु कुछ जातियो सछूत में अपग्रेड हो गयी हैं कुछ उन वर्ग से चमार जाति में सम्मिलित हो गयी हैं। सन् 1891 की जनगणना के अनुसार भारत में मात्र चमारों की जनसंख्या 14 (चौदह) प्रतिशत थी। यदि आधुनिक विशुद्ध चमारों की जनसंख्या निकाली जाये तो लगभग 21 प्रतिशत होगी। अछूतों के अलग समुदाय माना गया है ठीक उसी प्रकार जैसे हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई, आदि क्योंकि वह तो हिन्दू है नहीं अन्य धर्म अपनाया नहीं है। क्षेत्रवार चमार जाति की उपजातियाँ पाई जाती है जिन्हें उनके रहन–सहन, व्यवसाय तथा रीति–रिवाजों से परिभाषित किया गया है। कुछ चमार उपजातियां भोगौलिक आधार पर है जैसे आजमगढिया, नौधिया, गुलिया, अहिरवार, झूसिया या धूसिया, गंगाधारी, पुरबिया, उत्तरा, दक्षिणा आदि कुछ स्थानांतरण से बन गये जैसे गोरखपुर में चार–पाँच सौ वर्ष पहले चमार नहीं थे वहाँ जो बाद में बन गये वे गोरखपुर चमार कहलाए।

कुछ चमार उपजातियों में शरीर के गठन, बनावट के आधार पर भिन्नता मिलती है। आगरा, मेरठ, झाँसी, अलवर डिवीजन, ग्वालियर, भरतपुर तथा हरियाणा, पंजाब के चमारों के लंबे कद, साफ रंग, तीखे नैन, नक्स मिलता है और जटिया को शारीरिक रूप से श्रेष्ठ तथा आर्थिक रूप से सम्पन्न और श्रेष्ठ माना है। पश्चिमी उत्तर प्रदेश के जाटव अपने की यदु जनजाति तथा जाट और जाटू से जोड़ते हैं। उनका अच्छा कद, उत्तम दर्जे की बनावट चेहरे पर चमक दमक मिलती है कुछ चमार उपजातियाँ अपने को राजपूतों से जोड़ती हैं, जैसे–सिकरवार, सरबरियाँ, कनौजिया–चौहान, चंदेल परमार, भदौरिया, बुंदेला, कछवाही, बनौधिया से सब राजपूतों के गोत्र हैं। चमारों की कुछ उपजातियाँ निम्न जातियों में से भी आई जिनमें कोरी, तुरकिया, डोम, कंजर, हाबूडा, कोल और जैसवार है। इस सबके बावजूद चमार जाति की विशेषताओं से पता चलता है कि आर्यों से चमार और अन्य दलित जातियों का कोई सम्बन्ध नहीं है।

यद्यपि चमारों में हिन्दू होने का कोई लक्षण नहीं मिलता फिर भी 1901 की जनगणना में इस जाति को हिन्दू माना गया है। इस सब की कसौटी यह रखी गयी थी कि वह द्विज हिन्दू है जिसके हाथ का अन्य उच्च जातियाँ पानी पी सकेंगी। कुछ वे जातियाँ जिनके हाथ से कोई भी सवर्ण तथा द्विज जाति पानी नहीं पीयेगी उनमें चमार तथा अन्य दलित जातियाँ आती हैं। चमार गाँव से बाहर चमरोंटी, चमरवारे या अलग मुहल्ले में रहता है, वह बहिष्कृत है। 1891 की जनगणना के अनुसार चमार जाति की 1156 (एक हजार एक सौ छप्पन) उपजातियाँ और भारत की समस्त जनसंख्या का 14 प्रतिशत चमारों की

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और दबायें।

जनसंख्या थी। जैसा कि सहारनपुर की जनसंख्या पता चलता है कि 1891 में हर पाँचवां व्यक्ति चमार था।

उत्तर प्रदेश में चमारों की दो उपजातियों अर्थात् जटिया और जैसवार बहुसंख्या और प्रभावशाली जातियाँ हैं। मेरठ, आगरा, बुलंदशहर, अलीगढ़, मथुरा, एटा, इटा मैनपुरी, रूहेलखंड, मुरादाबाद, बदांयु, ग्वालियर, भरतपुर, अलवर, गुडगाँव, पंजाब आदि में जटिया जात का बाहुल्य है और इलाहाबाद, जौनपुर, बनारस आजमगढ़, मुरादाबाद, फैजाबाद के प्रभाव के कारण अपने–अपने को एक–दूसरे से श्रेष्ठ और उच्च मानती है। किन्तु ब्रिक्सने जटिया को श्रेष्ठ माना है। जटिया कृषि खेतिहर मजदूर, जूता बनाने, राजमिस्त्री आदि व्यवसायों में लगे हैं और आरम्भ ही वह आर्थिक रूप से सम्पन्न, सामाजिक रूप से जागरूक, शिक्षा के क्षेत्र अग्रणी एवं संघर्षशील रहा है। जटिया सवर्ण की भाँति रहता आया है चाहें वह उत्तर प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान, पंजाब, दिल्ली तथा मध्य प्रदेश कहीं भी निवास का क्षेत्र है। वह अस्तित्व के लिए नहीं बल्कि श्रेष्ठता के लिए संघर्ष करता है कुछ जातियाँ अपने आपको जाट जादू से जोड़ते है जिसका अर्थ है ऊँट हाँकने वाला (केमिकल ड्राइवर) कुछ बताते हैं कि जाटों ने चमारों से विवाह किया उससे जो बहिष्कृत जाति बनी वह जाटव कहलाई। यदु कृष्ण की जाति से सम्बन्धित था जो जनजाति माना गया है। पंजाब के चांदार ऐसे चमार थे जो गौड ब्राह्मणों को अपने यहाँ व्यवसाय में नौकर रखते थे।

पूरब में जैसवार चमार उपजाति अति प्रभावशाली रही है। जिसने क्वाइव की फौज में भर्ती होकर प्लासी के युद्ध में मार्शल माली जाने वाली जातियों की सेनाओं को हराकर विजय हासिल की। जिस प्रकार महाराष्ट्र में महार रेजीमेंट थी उसी प्रकार चमार रेजीमेंट भी थी। जब अंग्रेजों ने भारत को पूर्ण गुलाम बना लिया तो सवर्णों ने अपनी चालाकी से महार और चमार रेजीमेंट को गैरमार्शल जाति घोषित करवा के समाप्त करवा दिया और अपनी जाति गत सेनाएँ बनायें रखीं। महार रेजीमेंट को तो बाबासाहेब ने दुबारा खड़ा करवा दिया किन्तु चमार रेजीमेंट समाप्त हो गयी।

सतनामी, रैदासी–हरियाणा, पंजाब, मध्य प्रदेश में पाये जाते हैं। यहाँ लालगीर और अलखगीर भी पाये जाते हैं, चांडौर जूता बनाता है गांठता नहीं। नौना, करौल अलीगढ़, कानपुर, बुलंदशहर में पाये जाते हैं ये जूता बनाते हैं। धूम, धीमर–राजकुमारी, निगातीं, धीगरिया, धनगढ़, धुरचढ़ा, पछावन, राज मित्री आदि ये उ.प्र. मिर्जापुर, में पाये जाते हैं। चमड़े का कार्य, बुनाई, धुनाई, चिनाई पशुपालन आदि। उत्तर प्रदेश में धुनिया चमार से जुलाहा, धानुक, इनका काम मरे पशु उठाना तथा झूंठन खाना बताया गया है। दफाली, भांड, रामदासी, चांचर, आगडी ढेड (घेड) आदि ये पंजाब लुधियाना, तथा बुनिया सहतिया, सिख चमार, मोची, मुसलमान, चमार आदि अनेक उपजातियाँ हैं जो पूर्वोत्तर तथा पश्चिमोत्तर भारत में पाई जाती हैं। दोसाध या दुसाध–लखनऊ, गोरखपुर, बिहार बंगाल में पाई जाती है ये सुअरपालन, चौकीदारी आदि कार्य करते हैं। मुसहर चूहे खाता है पशुपालन, मजदूरी आदि। उनके पिता तथा वे स्वंय मठाधीश थे। उपरोक्त मुख्य उपजातियों के अतिरिक्त ऐसी अन्य जातियों हैं जो परंपरागत रूप से चमड़े के या अन्य गंदे कार्यों से जुड़े हुए हैं। ये उपजातियाँ ब्राह्मण बाद की शिकार हुई उनकी जनसंख्या कम है ये मुख्य दलित से हटते गये इनमें मुख्यतः खटीक, पासी, धोबी, रजक, रंजक, चनाल, जुलाहा, कोरी आदि आते हैं। खटीक बकरे की खाल रंगता है। इन जातियों के अतिरिक्त कुछ देशज और स्थानीय जातियाँ भी हैं। इनमें पैकवाहा, महोबिया, देसवार, कोर–चमार, मेघवाल, बैरवा कसौटिया, बलाई, चांडौर आदि। ये राजस्थान में पाई जाती हैं। इनमें आपस में शादी विवाह नहीं होते थे किन्तु अब होने लगे हैं। इन में महार, बाल्मीकि दोनों बहुत नजदीक हैं महार सड़कों पर झाड़ू का काम करता है, तो बाल्मीकि घरों में वही काम करता है। इन सब विशेषताओं के आधार पर उक्त उपजातियों अनार्य तथा चमार जाति से सम्बन्ध रखती है। मराठी चमार, महार, लालबेगी, मोची, कल्पा, चांभर, परदेशी जींगर, रंगारी, ढोर कटाल, ये चमड़े का झाड़ूका का काम करते हैं। सभी एक दूसरे को एक दूसरे से बड़ा या छोटा मानते हैं। महार बुद्ध को मानता है तो चमार हिन्दू है। तमिलनाडू में चकलियान, मदगारू ये गाँव से बाहर रहते हैं भद्दी भाषा का प्रयोग करते हैं। चमड़े और भंगी का दोनों काम करता है। इसके अतिरिक्त दर्जी, बजारा, धोबी, बन्हाई कायस्थ, मोची भी चमड़े का काम करता है। कायस्थ मोची घोड़े की काठी बनाता है इनमें सक्सेना और श्रीवास्तव दोनों ही आते हैं। बंगाल का कबीर पंथी तथा बंगाल बिहार का कायस्थ मोची जो केवल गाय की खाल रंगता है जो बाद में श्रीवास्तव, सक्सेना कहने लगे। सन् 1891 की जनगणना के अनुसार ये चमार थे सुअर नहीं खाते थे। बंगाली मोची गाय की खाल रंगता है खटीक बकरे की खाल रंगता है। पंजाब का मोची स्वंय को राजपूत समझता है।

चमारों की उक्त उपजातियों के रहन–सहन, व्यवहार, खानपान, व्यवसायों से यह स्पष्ट होता है कि हजारों दलित उपजातियों एक ही जाति की है, सभी प्रकार से समानता रखते हुए भी एक नहीं है बिखराव है। चमार जाति प्रमुख उपजातियों में शादी विवाह स्थानीयता तथा उपजाति के आधार पर ही होते हैं अपनी ही उपजाति में गोत्र बचाकर विवाह करते हैं। अधिकांश चमारों में चचेरे ममेरे, फुफेरे, मौसेरे रिश्तों में विवाह नहीं होता, संपिड में भी नहीं यहाँ तक की सगोत्र के अलावा जिले के छोड़कर लड़की की विवाह किया जाता है। इस सब का यही कारण है कि चमार जाति भारत में बहुसंख्यक जाति है तथा संपूर्ण भारत में प्रत्येक स्थान पर मिलती हैं। वही विडंबना है कि भारत की सबसे अधिक जनसंख्या वाली तथा शक्तिशाली जाति हजारों उपजातियों तथा क्षेत्रों धर्मों, सम्प्रदायों, पथों में बटी है। ब्राह्मणवादी व्यवस्था को सबसे अधिक दलित ओढे बैठे हैं, इसलिए एक उपजाति दूसरी उपजाति से स्वयं की उपजाति को श्रेष्ठ, उच्च समझती है। इस अज्ञान के कारण आज दलित सबसे अधिक पशुवत उत्पीड़न का शिकार है।

**साभार :**
**चमार जाति इतिहास और संस्कृति**
**पेज संख्या 146 से 152 तक**
**एस.एस.गौतम**
**डा० आर. एम. एस. विजयी**

# हमे अपनी ताकत का एहसास करना होगा–कांशीराम

**(बिलासपुर) 27 सितम्बर 1984**

बहुजन समाज पार्टी के तत्वावधान में आजाद भारत में बहुजन समाज गुलाम और लाचार क्यों? इस विषय पर जनसम्पर्क के लिए जनआन्दोलन के तहत एक जनसभा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत जी ऋषिकर एवं टार्जन सिंह के जागृति–जत्थे के साथ हुई।

सभा को सम्बोधित करते हुये कांशीराम जी ने कहा कि गुलामी हमारे समाज पर इस देश के हुक्मरानों द्वारा थोपी गयी है। इसलिए हमें अपनी ताकत का एहसास करके इन गुलामी और लाचारी की जंजीरों को तोड़ना होगा। यदि समय के रहते बहुजन समाज अपनी ताकत को पहचान लेता है तो इस समाज को गुलाम बनाये रखना शोषकों के वश की बात नहीं। पार्टी अध्यक्ष ने बाबा साहब डा. अम्बेडकर के कथन को दोहराते हुए कहा कि 'अधिकार मांगने से नहीं मिलते उन्हें अपने बलबूते पर हासिल करना होगा।'

मा. कांशीराम ने कहा कि हमें राजनैतिक समानता तो आजादी के साथ ही प्राप्त हो गयी थी लेकिन सामाजिक व आर्थिक समानता आज तक न मिल पाने के कारण इसे हमें अपने एक व्यक्ति के वोट को लोकतांत्रित तरीके के माध्यम से प्राप्त करना होगा, आज तक गरीबों के वोटों को अमीरों के नोटों द्वारा खरीदा गया इसके माध्यम से इस समाज को आज तक गुलाम बनाये रखा। इसलिए न बिकने वाला समाज होना चाहिए जिससे हम अपने मत का सही प्रयोग करें। हम एक नहीं होंगे तो शोषक वर्ग हमारा शोषण करके हमें लम्बे समय तक गुलाम बनाने में लगा रहेगा क्योंकि हमारी गुलामी उनके हित में है। इसमें दोष शोषकों का तो है ही हमारा समाज भी इसके लिए दोषी है।

मा. कांशीराम ने पिछड़े वर्ग की समस्या पर चर्चा करते हुए मंडल कमीशन रिपोर्ट को सरकार द्वारा रद्दी की टोकरी में डाले जाने पर सीधा कटाक्ष किया तथा कहा कि ये सरकार की चाटुकारिता की नीति है। मंडल कमीशन मात्र वोट की राजनीति के लिए ही बिठाया था, पिछड़े वर्ग की समस्याओं के समाधान के लिए नहीं। आपने कहा कि राष्ट्रीय स्तर की सभी पार्टियाँ ब्राह्मणवाद के चंगुल में हैं इसलिए वे इस दलित–शोषित समाज के बारे में क्यों सोचने लगे। इन्ही मुद्दों को दृष्टिगत रखकर 14 अप्रैल 1984 को बहुजन समाज पार्टी की स्थापना की गयी है जिसकी आधारशिला बामसेफ पिछले 12 वर्ष से समाज के कार्यो में दिन–रात लगी हुई है। इसी का परिणाम है बी.एस.पी. 85 प्रतिशत बहुजन समाज का प्रतिनिधित्व करती है। अब सारी जिम्मेदारी आपके कन्धों पर है आपको आगामी चुनाव में एकता का परिचय देना होगा।

**सभा को रामगोपाल कश्यप ने भी सम्बोधित किया। बिलासपुर शाखा की ओर से 12000 रूपये की थैली सुशीला पुरायणे के हाथों मा. कांशीराम जी की भेंट की गयी। धनगांव (पामगढ़) से सीताराम एवं साथियों द्वारा मा. कांशीराम के रूपयों की माला भेंट की गयी। गुहाराम साधु द्वारा 5000 रूपये की थैली कोरबा की ओर से भेंट की गयी।**

**कार्यक्रम को सफल बनाने में बोधराम सारथी, मदनसिंह, संतराम राठौर, पचायत, दाऊराम रत्नाकर, सीताराम, डी. लदेर एवं रामगोपाल कश्यप आदि का सराहनीय योगदान रहा।**

**(बहुजन संगठक, वर्ष 5, अंक 26, 8 अक्टूबर, 1984)**

**साभार :**
**मा. कांशीराम साहब के ऐतिहासिक भाषण**
**खण्ड–3**
**पेज संख्या 82 से 83 तक**
**ए.आर.अकेला**

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और 🔔 दबायें।

# सोलहवीं पहेली–चातुर्वर्ण्य–क्या ब्राह्मण अपनी उत्पत्ति से परिचित है?

प्रत्येक हिंदू का यह मूल विश्वास है कि हिंदुओं की सामाजिक व्यवस्था दैवीय है। इस दैवीय व्यवस्था के तीन आधार हैं। प्रथम, समाज चार वर्णों में विभक्त है–1. ब्राह्मण, 2. क्षत्रिय, 3. वैश्य और 4. शूद्र। द्वितीय, चारों वर्णों की स्थिति एक–दूसरे से जुड़ी है। उसमें चरण–दर–चरण असमानता है। ब्राह्मणों का स्थान सर्वोपरि है। क्षत्रिय ब्राह्मणों के नीचे हैं, परन्तु वैश्यों और शूद्रों के ऊपर है। शूद्र सबसे नीचे हैं। तृतीय, चारों वर्णों का व्यवसाय निश्चित है। ब्राह्मणों का व्यवसाय अध्ययन–अध्यापन है। क्षत्रियों का कार्य लड़ना है। वैश्यों का कार्य व्यापार है और शूद्रों का शरीरिक श्रम से तीनों वर्णों की सेवा करना है। यह हिन्दुओं की वर्ण–व्यवस्था कहलाती है। यह हिंदूधर्म की आत्मा है। वर्ण–व्यवस्था को छोड़कर हिन्दुओं में ऐसा कुछ नहीं है, जिसमें वे अन्य धर्मो से भिन्न हों। इस कारण यह आवश्यक है कि इस बात का विवेचन किया जाए कि वर्ण–व्यवस्था का प्रचलन कैसे हुआ?

इसकी उत्पत्ति की व्याख्या के लिए हमें हिंदुओं के प्राचीन शास्त्रों का मंथन करना होगा कि वे इस विषय में क्या कहते हैं?

## I

यह अच्छा होगा कि सर्वप्रथम वेदों के विचारों को देखा जाए। इस विषय पर ऋग्वेद के दसवें मण्डल के नब्बेवें श्लोक में इस प्रकार कहा गया है :

1. ''पुरूष के सहशस्त्र शीशा हैं, एक सहस्त्र चक्षु, एक सहस्त्र चरण। वह पृथ्वी पर सर्वत्र परिपूर्ण व्यापक है। उसने दस अंगुलियों से हर छोर से समस्त भूमंडल को आच्छादित कर रखा है।'' ''पुरूष स्वयं सम्पूर्ण (ब्रह्मांड) है जो वर्तमान है। (जो भावी है) वह अमरता का स्वामी है, भोजन से उसका विस्तार होता है। 3. उसकी महानता ऐसी है और पुरूष सर्वश्रेष्ठ है। सारी सृष्टि उसका क्षेत्र है और उसका तीन चौथाई अविनाशी अंश अंतरिक्ष में है। 4. पुरूष का तीन चौथाई अंश उर्ध्व है, उसका एक चौथाई अंश यहां पुनः विद्यमान है, फिर उसका सर्वत्र विलय हो गया। उन सभी पदार्थों में जो भक्षण करते हैं और भक्षण नहीं करते। 5. उससे विराज उत्पन्न हुआ और विराज से पुरूष। जन्म लेते ही वह धरती से आगे बढ़ गया, आगे भी और पीछे भी। 6. जब देवों ने पुरूष की आहुति से यज्ञ किया, वसंत उसका घी था, ग्रीष्म लकड़ी और शरद समिधा। 7. यह बलि पुरूष जो सर्वप्रथम जन्मा, उन्होंने बलि घास पर जला दिया। उसके साथ देवताओं, साध्यों और ऋषियों ने आहुति दी। 8. इस ब्राह्मंड यज्ञ से दही और मक्खन उपलब्ध हुए। इससे वे नभचर और थलचर बने जो वन्य और पालतू हैं। 9. ब्रह्मांड यज्ञ से ऋग्वेद और सामवेद की ऋचाएं निकलीं, छंद और यजुस निकले। 10. उससे अश्व जन्में और दोनों जबड़ों वाले सभी पशु जन्में, मवेशी जन्में और उसी से अजा मेष जन्मे। 11. जब (देवों के) पुरूष को कितने भागों में काटकर विभाजित कर दिया। उसका मुख्या क्या था? उसकी कितनी भुजाएं थीं? (कौन से दो तत्व) उसकी जंघाएं और चरण बताई गई हैं। 12. ब्राह्मण उसका मुख था, राजन्य उसकी भुजाएं बनीं, जो वैश्य (बना) वह उसकी जंघाएं थीं, शूद्र उसके पैरों के उत्पन्न हुए। 13. उसकी आत्मा (मानस) से चन्द्रमा, उसके चक्षु से सूर्य, उसके मुख से इन्द्र और अग्नि, उसके श्वास से वायु बनी। 14. उसकी नाभि से मारूत बना, उसके शीर्ष से आकाश बना, उसके चरणों से धरती उसके कर्ण से दिशाएं और इस प्रकार विश्व बना। 15. जब देवता यज्ञ कर रहे थे, उन्होंने पुरूष को एक बलि–जीव के रूप में बांधा। इसके लिए सात छड़ियों की, सात टुकड़ों की समिधा चढ़ाई गई। 16. यह यज्ञ में देवताओं ने आहुति दी। ये प्रथम अनुष्ठान थे। इस शक्तियों ने आकाश से कहा पूर्व साध्य, देवतागण कहां हैं।''

इस मंत्र वृंद का सार्वविदित नाम ''पुरूष सूक्त'' है और यह जाति और वर्ण–व्यवस्था का शास्त्रीय सिद्धांत माना जाता है।

अन्य वेदों में इस सिद्धांत की कहां तक पुष्टि की गई हैं?

सामवेद के मंत्रों में पुरूष सूक्त सम्मिलित नहीं किया गया, न इसमें वर्ण–व्यवस्था की कोई अन्य व्याख्या की है।

यजुर्वेद की दो शाखाएं हैं, 'श्वेत' और 'कृष्ण'।

कृष्ण यजुर्वेद में तीन संहिताएं और मंत्रों का समूह हैं। ये हैं कठ संहिता, मैत्रायणी संहिता और तैत्तिरीय संहिता।

श्वेत यजुर्वेद में मात्र एक संहिता है – वाजसनेयी संहिता।

कृष्ण यर्जुवेद की मैत्रायणी और कठ संहिताओं में ऋग्वेद के पुरूष सूक्त का कोई संदर्भ नहीं है, न उसमें वर्ण–व्यवस्था की उत्पत्ति का मूल बताने का कोई प्रयास है।

कृष्ण यजुर्वेद की तैत्तिरीय संहिता और श्वेत यजुर्वेद की वाजसनेयी संहिता में वर्ण–व्यवस्था के संबंध में कुछ संकेत है।

वाजसनेयी संहिता में वर्ण–व्यवस्था के आरंभ के संबंध में केवल एक प्रसंग है। दूसरी ओर तैत्तिरीय संहिता में दो प्रसंग हैं। इन दोनों प्रसंगों के संदर्भ में दो बातें उल्लेखनीय हैं। प्रथम यह कि इन दोनों में रंच–मात्र भी साम्य नहीं है। वे नितांत भिन्न हैं। दूसरे यह कि एक में तो श्वेत यजुर्वेद की वाजसनेयी संहिता से पूर्णतः साम्यता है। तैत्तिरीय संहिता का मूल पाठ निम्न प्रकार से है जिसे स्वतंत्र व्याख्या कहा जा सकता है–

''वह (वृात्य) भावावेश से भर उठा तब राजन्य प्रकट हुआ।''

''जिसके घर यह जाने वाला वृात्य अतिथि रूप में आता है, उसे वह (राजा) स्वयं से श्रेष्ठ जानकर उसका सम्मान करें। ऐसा करके वह राजपद अथवा अपनी सत्ता पर आघात नहीं करता। उससे ब्राह्मण प्रकट हुआ और क्षत्रिय। उन्होंने कहा ''हम किस में प्रवेश करें आदि''

वाजसनेयी संहिता में सम्मिलित व्याख्या जो तैत्तिरीय संहित से साम्य रखती है, इस प्रकार है–

''उसने एक के साथ स्तुति की। प्राणी बने, प्रजापति राजा थे। उन्होंने तीन के साथ स्तुति की, ब्राह्मण की रचना हुई। ब्राह्मणस्पति शासक थे। उन्होंने पांच के साथ स्तुति की, विद्यमान पदार्थ उत्पन्न हुए। धातृ शासक थे। उन्होंने नौ के साथ स्तुति की, पितृ उत्पन्न हुए। अदिति स्वामी थे। उन्होंने ग्यारह के साथ स्तुति की, ऋतुएं उत्पन्न हुईं। आर्तव स्वामी थे। उन्होंने तेरह के साथ स्तुति की, मास उत्पन्न हुए। वर्ष राजा था। उन्होंने पन्द्रह के साथ स्तुति की, क्षत्रिय उत्पन्न हुआ। इन्द्र राजा थे। उन्होंने सत्रह के साथ स्तुति की, पशु उत्पन्न हुए। बृहस्पति राजा थे। उन्होंने उन्नीस के साथ स्तुति की, शूद्र और आर्य (वैश्य) उत्पन्न हुए। दिवस और रात्रि शासक थे। उन्होंने इक्कीस के साथ स्तुति की, अविभाजित खुरधारी पशु उत्पन्न हुए। वरूण राजा थे। उन्होंने तेईस के साथ स्तुति की, लघु पशु उत्पन्न हुए। पुशान राजा थे। उन्होंने पच्चीस के साथ स्तुति की, वन्य जीव उत्पन्न हुए। वायु राजा थे। (ऋ.वे. 10.90, 8) उन्होंने सत्ताईस के साथ स्तुति की, धरती और स्वर्ग विलग हुए। वसु, रूद्र और आदित्य उनसे विलग हो गए, वे राजा थे। उन्होंने उन्तीस के साथ स्तुति की, वृक्ष उत्पन्न हुए। सोम राजा थे। उन्होंने इकत्तीस के साथ स्तुति की, प्राणी उत्पन्न हुए। मास के पक्ष राजा थे। उन्होंने इकत्तीस के साथ स्तुति की, विद्यमान पदार्थ शांत हो गए। प्रजापति परमेष्ठी राजा थे।

यहां यह उल्लेखनीय है कि न केवल ऋग्वेद और यजुर्वेद में ही असमानता है, बल्कि यजुर्वेद की दो संहिताओं में ही, वर्णों की उत्पत्ति जैसे महत्वपूर्ण विषय पर विषमता है।

अब हम अथर्ववेद पर आते हैं। इसमें भी व्याख्याएं हैं। उसमें पुरूष सूक्त सम्मिलित है। यद्यपि, जिस क्रम में ऋग्वेद के मंत्र हैं, वह वैसा नहीं है। महत्वपूर्ण बात यह है कि अथर्ववेद पुरूष सूक्त से संतुष्ट नहीं है। इसकी अलग व्याख्या भी है। एक व्याख्या निम्नलिखित है :

''सर्वप्रथम ब्राह्मण उत्पन्न हुआ। उसके दस सिर और दस मुख थे। उसने सर्वप्रथम सोमपान किया, उसने विष को प्रभावहीन किया।

''देवता राजन्य से भयभीत थे, जब वह गर्भ में था। उन्होंने उसे बंधन ग्रस्त कर दिया जब वह गर्भ में था। परिणामस्वरूप, वह राजन्य बंधनयुक्त उत्पन्न हुआ। यदि वह अजन्मा निर्बध होता तो वह अपने शत्रुओं का वध करता। राजन्य, कोई अन्य जो चाहे कि वह बंधन मुक्त उत्पन्न हो और अपने शत्रुओं का हनन करता रहे तो उसे वे एन्द्र ब्राह्स्पत्य आहुतियां दें। राजन्य के लक्षण इन्द्र जैसे हैं और ब्राह्मण बृहस्पति है। ब्राह्मण के माध्यम से ही कोई राजन्य को बंधनमुक्त कर सकता है। स्वर्णबंध, एक उपहार, स्पष्ट रूप से उसे बंधन से मुक्त करता है।''

एक अन्य व्याख्या, उन व्यक्तियों का उल्लेख करती है, जो मनु की संतति है, उनका निम्नांकित उद्धरण में उल्लेख हैः

''प्रार्थनाएं और मत्र पहले इन्द्र की उपासना में उस उत्सव में संकलित हुए जिसे अथर्वन, पिता मनु, और दधीचि ने सुशोभित किया। ''हे रूद्र। यज्ञ से पिता मनु ने जो सम्पदा अथवा सहायता ग्रहण की, तेरे निर्देश में हमें वही सब प्राप्त हो।''

''आपके वे पवित्र उपचार, हे मरूत। वे जो बहुत मांगलिक है, हे शक्तिशाली देव। वे जो बहुत लाभप्रद हैं, जिनको हमारे पिता मनु ने पसंद किया है, रूद्र के वे वरदान और सहायता, हमें प्राप्त हो।''

''जो प्राचीन मित्र दैवी शक्ति से सम्पन्न था। पिता मनु ने उसके प्रति देवों की सफलता के प्रवेश द्वार की भांति मंत्र रचे थे।''

''यज्ञ मनु हैं, हमारे पालक पिता''

''देवो, तुमने हमें उत्पन्न किया, पोषित किया और हमारे प्रति अनुग्रह किया, हमें पिता मनु के मार्ग से विचलित न करो।''

''वह (अग्नि) जो मनु की संतति के बीच देवताओं के उद्बोधक स्वरूप निवास करता है, वह इनका भी स्वामी है।''

''अग्नि, देवताओं सहित और मनु की संतान सहित मंत्रोच्चार से विविध यज्ञ कर रहे हैं, आदि ''तुम देवों, वज और ऋभुगण जैसे देवों को प्रसन्न करते हो। मानुष की संतति के बीच शुभ दिन देवताओ के मार्ग से हमारे यज्ञ में आओ।''

''मनुष–जन ने यज्ञ में अग्नि उद्बोधक की स्तुति की।''

''मनुष्यों के स्वामी अग्नि ने जब भी कृतज्ञ मानुष–जन के आवास को प्रदीप्त किया, उसने राक्षस जन का मार भगाया।''

इस संदर्भ में स्थिति के निरूपण के लिए एक क्षण रूक कर विचार करते हुए यह बात बिल्कुल स्पष्ट होती है कि चार वर्णों की उत्पत्ति के विषय में वेदों में कोई सर्वसम्मति नहीं है। किसी अन्य वेद ने ऋग्वेद की पुष्टि नहीं की है कि ब्राह्मण प्रजापति के मुख से उत्पन्न हुए, क्षत्रिय भुजाओं से, वैश्य जंघाओं से और शूद्र पैरों से।

## II

अब हम ब्राह्मण साहित्य पर आएं और देखें कि इस प्रश्न पर वे क्या कहते हैं?

शतपथ ब्राह्मण की व्याख्या इस प्रकार हैं :

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और दबायें।

''प्रजापति ने'' भू'' जपते हुए यह पृथ्वी बनाई, ''भुवः'' के साथ वायु बनाई, ''स्वाहा'' के साथ आकाश बनाया। ब्रह्मांड का इस संसार से सह–अस्तित्व है। अग्नि सर्वत्र व्याप्त है। ''भू'' कहकर प्रजापति ने ब्राह्मण उत्पन्न किया, ''भुवः'' से क्षत्रिय, ''स्वाहा'' से विस बनाया। अग्नि सर्वत्र व्याप्त है। भू कहकर प्रजापति ने स्वयं को उत्पन्न किया, भुवः कहकर संतति रची। ''स्वाहा'' से पशु उत्पन्न हुए। वह विश्व स्व, संतति और पशु है, अग्नि सर्वत्र व्याप्त है।''

शतपथ ब्राह्मण की एक अन्य व्याख्या है। यह निम्नांकित हैः

''भाष्यकार के अनुसार यहां ब्रह्मा अग्नि रूप में विद्यमान थे। जिसमें ब्राह्मण वर्ण का रूप है। पहले यह एक मात्र (ब्राह्मण) थे। एक रहते उनकी वृद्धि नहीं हुई। उन्होंने शक्ति से एक क्षेष्ठ क्षात्र (क्षेत्र) उत्पन्न किया अर्थात् देवताओं में वे जिनमें शक्ति है (क्षत्राणी), इन्द्र, वरूण, सोम, रूद्र, परजन्य, यम, मृत्यु, ईशान। इस प्रकार क्षात्र से श्रेष्ठ कोई नहीं। इसलिए ब्राह्मण राजसूय यज्ञ में क्षत्रिय से नीचे बैठते हैं। वह क्षत्रिय की गरिमा स्वीकार करता है। ब्रह्मा, क्षत्रिय का उदगम है। इस प्रकार यद्यपि राजा की श्रेष्ठता है अंत में वह उद्गम हेतु ब्राह्मण के आश्रय में जाता है। वह अति दयनीय बन जाता है। उसी के समान जिसकी श्रेष्ठता आहत होती है। 24. उसका विस्तार नहीं हुआ। उसने विस् उत्पन्न किया। देवताओं की इस श्रेणी में वसु, रूद्र, आदित्य, विश्वदेव, मारूत आते है। 25. उसकी वृष्द्धि नहीं हुई। उसने शूद्र–वर्ण पूशान उत्पन्न किया। यह पृथ्वी पूशान है। सो वह सभी का पोषण करती है। 26. उसकी वृद्धि नहीं हुई, उसने शक्ति से एक विलक्षण रूप उत्पन्न किया। न्याय (धर्म) यह शासक है (क्षात्र) अर्थात् न्याय। इस प्रकार न्याय से श्रेष्ठ कुछ नहीं। इसलिए निर्बल बलवान से त्राण को न्याय मांगता है, जैसे एक राजा से। यह न्याय सत्य है। परिणामस्वरूप ऐसे व्यक्ति के विषय में, वे कहते हैं–''यह सत्य बोलता है, क्योंकि उसमें दोनों गुण हैं।'' 27. यह ब्रह्म, क्षात्र, विस् और शूद्र है। अग्नि के माध्यम से देवताओं में वह ब्रह्मा बन जाता है, मनुष्यों में ब्राह्मण। (दैवी), क्षत्रिय के माध्यम से (मनुष्य) एक क्षत्रिय, (दैवी) वैश्य से एक (मनुष्य) वैश्य, (दैवी), शूद्र के माध्यम से एक (मनुष्य) शूद्र बनता है। अब वह देवों में अग्नि और मनुष्यों में ब्राह्मण है, और वे वास के इच्छुक हैं।''

तैत्तिरीय ब्राह्मण में तीन व्याख्याएं है। प्रथम इस प्रकार है :

यह समस्त (ब्रह्मांड) ब्रह्मा द्वारा रचित है। मनुष्य कहते हैं कि वैश्य ऋक ऋचाओं से बना है। वे कहते है यजुर्वेद के गर्भ से क्षत्रिय उत्पन्न हुआ है। सामवेद से ब्राह्मण प्रकट हुआ। यह शब्द प्राचीन है, घोषित प्राचीन।

दूसरी कहती हैः

''ब्राह्मण, वर्ण देवों से प्रकट हुआ, शूद्र असुरों से''

तीसरी इस प्रकार हैः

''वह शुष्क भोजन से स्वेच्छा से दुग्ध की आहुति दे। शुद्र दुग्ध की आहुति न दें क्योंकि शूद्र शून्य से जन्मा है। वह कहते हैं कि जब शूद्र दूध चढ़ाता है, वह आहुति नहीं है। शूद्र अग्निहोत्र में दूध से आहुति न दे क्योंकि वे इसे शुद्ध नहीं करते। जब उसे छान लिया जाये, तब वह आहुति है।

अब ब्राह्मणों के साक्ष्य को देखें, वे पुरूष सूक्त का कहां तक अनुमोदन करते हैं?

## III

अगली बात यह देखनी है कि वर्ण–व्यवस्था के संबंध में स्मृतियों की क्या व्याख्या है। उसका ज्ञान आवश्यक है। मनु ने इस संबंध में कहा है :

''उस (स्वयंभू) ने इच्छा करके और अपनी देह से विभिन्न जीवों की रचना के मनोरथ से पहले सागर की सृष्टि की और उसमें एक बीज छोड़ दिया। 9. यह बीज एक स्वर्णिम अंडज बन गया। सूर्य के आकार का, उससे वह स्वयं ब्रह्मा बनकर उत्पन्न हुए, सारे संसार का जनक। 10. जलधि नाराः कहलाया क्योंकि वह नर से उत्पन्न हुआ था और क्योंकि यह उनकी प्रथम क्रिया थी, इसलिए वे नारायण जाने जाते है। 11. वे अजर अगोचर, विद्यमान और अविद्यमान कर्ता पुरूष से उत्पन्न हुए, इसलिए जगत में ब्रह्मा कहलाए। 12. एक वर्ष एक अंडज में रहकर महिमामय पुरूष अपनी ध्यानावस्था से युग्म बन गए।''

''कि विश्व में प्राण प्रतिष्ठा हो, उन्होंने ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रों की रचना की जो उनके मुख, भुजाओं, जंघाओं और चरणों से उत्पन्न हुए। 32. अपनी देह को दो भागों में विभक्त कर परमात्मा (ब्रह्मा) एक अंग पुरूष और दूसरा अंग नारी बन गया उसमें उन्होंने विराज की सृष्टि की। 33. हे श्रेष्ठ द्विजो, जानो कि मैं ही वह पुरूष विराज स्वयं समस्त संसार का रचयिता हूं। 34. प्राणियों की उत्पत्ति हेतु मैंने कठोर उपासना की और सर्वप्रथम दस महर्षि, महान, ऋषि, जीवों के स्वामी बनाए। 35. यथा मरीचि, अत्रि, आंगिरस, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, प्रचेतस, वशिष्ठ, भृगु और नारद की रचना की। 36. उन्हें महान शक्ति प्रदान की, सात अन्य मनु, देवता और देवियां और अपार शक्तिमान महर्षि उत्पन्न किए। 37. यक्ष, राक्षस, पिशाच, गंधर्व, अप्सरा, असुर, नाग, सरिसृप, विशाल, पक्षी, और भिन्न–भिन्न पितर, 38. बिजली, गगन गर्जन, मेघ, शकुन अपशकुनकारी ध्वनियां, धूम्रकेतु और विभिन्न विभिन्न तारागण, 39. किन्नर, कपि, मीन, विविध पक्षी, पशु, मृग, मानव, वन्य पशु और दो जबड़ों वाले पशु 40. विशाल और लघु आकार के रेंगने वाले जीव मुख जुएं, मक्खियां, पिस्सू, डांस, वन मक्खी, और विविध अचर पदार्थ, 41. इस प्रकार अपने प्रयत्नों और अपने तपोबल से प्रत्येक जीव के पूर्व कर्मों के अनुसार समस्त चर–अचर का सृजन किया।

मनु ने अपनी 'स्मृति' में उन आधारभूत कारणों के विषय में एक अन्य मत प्रकट किया है, जिनके परिणाम स्वरूप मनुष्यों को चार श्रेणियों में विभाजित किया गया है

''अब मैं संक्षेप में बताता हूं कि किस क्रम से अपने गुणानुसार आत्माएं अपनी स्थिति को पहुंचती है। 40. सत्व सम्पन्न आत्माएं देवता बन जाती हैं, रजोगुणयुक्त मनुष्य बनती है, जबकि तमोगुण वाली वन्यजंतु होती है–यह तीन गतियां हैं। 43. हाथी, अश्व, शूद्र और प्रताणनीय म्लेच्छ, सिंह, बाघ और सूकर की मध्य अंधकार स्थिति को प्राप्त होते हैं। 46. राजा, क्षत्रिय, राज पुरोहित और वे व्यक्ति जिनका मुख्य व्यवसाय वाद प्रतिवाद है वे दुर्वासना की मध्य स्थिति को प्राप्त होते हैं 48. भक्त, तापस, ब्राह्मण, विमानारूढ़ देवतागण, तारामंडल, दैत्यों में न्यूनतम सदगुणी होते हैं। 49. अग्निहोत्री, ऋषि, देवतागण, वेद, दिव्य ज्योर्तिपुंज, वर्ष, पितृगण, साध्यगण द्वितीय प्रकार के सद्गुण युक्त होते हैं। 50. स्रष्टा ब्रह्मा, सदाचारिता, जो महान (महत्) है, जो अव्यक्त हैं, उनमें सर्वाधिक सद्गुण विद्यमान होते हैं।

हां, मनु ऋग्वेद को मान्यता प्रदान करते हैं परन्तु उनके विचारों की तुलना करना व्यर्थ है। उसमें मौलिकता का अभाव है। वह ऋग्वेद की ही अनुगामी है।

## IV

यह अच्छा रहेगा कि हम रामायण और महाभारत से इस मत की तुलना करें। रामायण का कथन है कि चारों वर्ण, मनु की संतान हैं, दक्ष की पुत्री और कश्यप भार्या।

''सुनो, मैं तुम्हे बताता हूं। सर्वप्रथम प्रजापतियों ने प्रारंभ किया जो सबसे पूर्व समय में जन्मे थे। सर्वप्रथम कर्दम थे, फिर वोकृत, शेष, समस्रेय, शक्तिमान बहुपुत्र, स्थाणु, मरीचि, अत्रि, प्रबल, क्रतु, पुलस्त्य, आंगिरस, प्रचेतस, पुलह, दक्ष, फिर वैवस्वत, अरिष्टनेमी और गौरवमूर्ति कश्यप जो अंतिम थे। दक्ष प्रजापति की साठ कन्याएं बताई जाती है। उनमें से अदिति, दिति, दनु, कालिका, ताम्र, क्रोध, मनु और अनला इन आठ सुन्दर कन्याओं का विवाह कश्यप से हुआ। प्रसन्न होकर कश्यप ने कहा– ''तुम मेरे समान पुत्र उत्पन्न करो, तीनों लोकों का पोषण करो। अदिति, दित्ति, दनु और कालिका तत्पर हो गई किन्तु अन्य तैयार न हुईं। अदिति से तैंतीस देवता उत्पन्न हुए। आदित्य, वसु, रूद्र और दो अश्विनी पुत्र। कश्यप पत्नी मनु से मनुष्य जन्मे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। ब्राह्मण का जन्म मुख से हुआ, क्षत्रिय का वक्ष से, वैश्य जंघाओं से, शूद्र चरणों से जन्मे। ऐसा वेद कहते है। अनला से शुद्ध फलों वाले वृक्ष उत्पन्न हुए। आश्चर्य! नितात आश्चर्य कि वाल्मीकि ने चार वर्णों की रचना प्रजापति के स्थान पर कश्यप से बताई। स्पष्ट है कि उनका ज्ञान सुनी–सुनाई बातों तक सीमित था। यह स्पष्ट है कि उन्हें यह ज्ञात नहीं था कि वेद क्या कहते हैं। अब महाभारत चार स्थानों पर चार भिन्न–भिन्न व्याख्याएं देता है। प्रथम इस प्रकार हैः

''महान् ऋषियों की भांति भव्यता से जन्मे प्रचेता के दस पुत्र गुणवान और पवित्र प्रतिष्ठित हुए और उनसे पूर्ण गौरवशाली प्राणी उनके मुख से प्रज्ज्वलित होने वाली अग्नि से स्वाहा हो गए। उनसे दक्ष प्रचेतस जन्ते और विश्व के जनक दक्ष से ये जगत। विरनी के सहवास से मुनि दक्ष को अपने समान एक सहस्र पुत्र प्राप्त हुए जिन्हें नारद ने मोक्ष का मार्ग बताया और सांख्य का अनुपम ज्ञान दिया। संतति वृद्धि के मनोरथ से दक्ष प्रजापति ने पचास पुत्रियां उत्पन्न की। उनमें से दस धर्म को दे दीं। तेरह कश्यप को, सत्ताइस काल नियंता इन्दु (सोम) को ..... अपनी तेरह में से सर्वश्रेष्ठ पत्नी दक्षयानि से मारीचि पुत्र कश्यप को इन्द्र के पश्चात अपनी शक्ति में अद्वितीय आदित्य तथा वैवस्वत प्राप्त हुए। वैवस्वत में शक्तिमान पुत्र यम वैवस्वत उत्पन्न हुआ। मार्तण्ड, (सूर्य वैवस्वत) को बुद्धिमान और वीरपुत्र मनु उत्पन्न हुए और प्रसिद्ध यम उसका (मनु) अनुज प्राप्त हुआ। बुद्धिमान मनु धार्मिक था जिसने एक प्रजाति चलाई। इस प्रकार उससे जन्मे (परिवार) मनुष्य, मानव जाति कहलाई। हे राजन् उससे ब्राह्मण क्षत्रियों के साथ उत्पन्न हुए।''

यहां प्रतिपादित सिद्धांत ठीक वैसा ही है जैसा कि रामायण में। भिन्नता मात्र इतनी है कि महाभारत में मनु को चार वर्णों का प्रणेता कहा गया है और दूसरे, इनमें यह नहीं कहा गया है कि चार वर्ण, मनु के चार अंगों से उत्पन्न हुए।

महाभारत की दूसरी व्याख्या ऋग्वेद के पुरूष सूक्त के समान है। वह इस प्रकार हैं :

''राजा ऐसे व्यक्ति को अपना राज पुरोहित नियत करे जो दुष्टता का प्रतिरोधी हो। इस विषय में वे यह प्राचीन कथा सुनाते हैं, जिसमें इला पुत्र मातृस्वन (वायु) और पुरूरवा का संवाद सन्निहित है। पुरूरवा ने कहाः ''तुम मुझे बताओं कि कब ब्राह्मण, कब अन्य तीन जातियां उत्पन्न हुईं और कब श्रेष्ठता (प्रथम की) स्थापित हुई? मातृस्वन ने उत्तर दिया–''ब्राह्मण का जन्म ब्रह्मा के मुख से हुआ, उसकी भुजाओं से क्षत्रिय, उसकी जंघाओं से वैश्य जबकि इन तीन वर्णों की सेवा हेतु उसके चरणों से चतुर्थ वर्ण शूद्र उत्पन्न हुआ। जन्मते ही ब्राह्मण धर्मतत्व की रक्षार्थ धरती पर भूतजात का स्वामी बन गया। फिर सृष्टा ने पृथ्वी का क्षत्रिय उत्पन्न किया। प्रजा की संतुष्टि को दण्ड धारण हेतु द्वितीय यम उत्पन्न किया और ब्रह्मा का यह आदेश था। इन तीन वर्णों को वैश्य धन–धान्य उपलब्ध कराए और शूद्र सेवा करें।'' तब इला पुत्र ने पूछाः'' वायु! मुझे बताओ, अपनी धन–सम्पदा सहित यह पृथ्वी किस के अधिकार में है ब्राह्मण के अथवा क्षत्रिय के?'' वायु ने उत्तर दिया,'' अपनी ज्येष्ठता के आधार पर पृथ्वी पर विद्यमान समस्त सम्पदा का स्वामी ब्राह्मण है, जो कर्तव्य–विधान में पारंगत है, उन्हें यह ज्ञात है। ब्राह्मण जो खाता है, पहनता है, लुटाता है, वह उसी का है। वह सभी जातियों में श्रेष्ठ है। प्रथम जन्मा और सर्वश्रेष्ठ। जिस प्रकार कोई स्त्री अपना पति (पहला) छिन जाने पर अपने देवर, जेठ को दूसरा पति बना लेती है, उसी प्रकार विपत्ति में ब्राह्मण पहला आश्रय है और इसके बाद कोई और''।

महाभारत के शांति पर्व में तीसरी व्याख्या दी गई हैः

भृगु ने उत्तर दिया इस प्रकार ब्रह्मा ने पहले अपनी शक्ति से प्रजापतियों के समान भव्य सूर्य और अग्नि को रचा। तब स्वामी ने सत्य, धर्मनिष्ठा, कठोर–भक्ति, सनातन वेद गुणकर्म, और स्वर्ग (प्राप्ति हेतु) की शुद्धता की सृष्टि की। उसने देवता, दानव, गंधर्व, दैत्य, असुर, महाराग, यक्ष, राक्षस, नाग, पिशाच और मानव, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र सभी वर्ण प्राणी रचे। ब्राह्मण का वर्ण गौर, क्षत्रिय का लाल, वैश्य का पीत और शूद्र का काला बनाया। तब भारद्वाज ने प्रतिवाद किया।'' यदि

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और 🔔 दबायें।

हर जाति के चार वर्ण (रंग) उसका परिचायक हैं तो इससे पहचान में भ्रांति होती है। लालसा, क्रोध, भय, लोभ, संताप, कुंठा, भूख, क्लांति, हम सब ने समान है। तब जाति किस से निर्धारित होती है? स्वेद, मूल, मल, श्लेष्मा, पित्त और रक्त सब में समान हैं (सभी शारीरिक विकार हैं) तब जाति किस से निर्धारित होती हैं? अवर्णित चल और अचल पदार्थ हैं, इनका वर्ण कैसे निर्धारित होता है''? भृगु ने उत्तर दिया, ''जातियों में कोई अंतर नहीं है।''

शांति पर्व में ही चौथी व्याख्या दी गई है। वह कहती हैं।

भारद्वाज ने फिर पूछा परमश्रेष्ठ ब्रह्मर्षि, मुझे बताएं वे क्या गुण है कि जिन से कोई ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य अथवा शूद्र बन जाता है?'' भृगु कहते हैं, ''जो शुद्ध है, प्रसव तथा अन्य संस्कारों से पवित्र हैं, जिसको वेदों का सम्पूर्ण अध्ययन है, संस्कारों को शुद्धतापूर्वक पूर्णता से अनुष्ठान सम्पन्न करते हैं, जो चढ़ावे से बचे पदार्थ ग्रहण करते हैं, अपने धर्म–गुरू से सम्बद्ध है, सदैव धर्मपरायण हैं और सत्य को समर्पित है–ब्राह्मण कहलाते हैं। उसमें सत्य के दर्शन होते हैं। जिसमें सत्य, उदारता, अनाक्रामकता, उपकारिता, सादगी, धैर्य और कठोर भक्ति परिलक्षित हैं–ब्राह्मण हैं। जो राजपद के कर्तव्य का पालन करता है, जिसे वेदाध्ययन का व्यसन है और जो आदान–प्रदान से प्रसन्नता अनुभव करता है, वह क्षत्रिय कहलाता है। वह जो लगनपूर्वक पशुपालन करता है, जिसको कृषि कार्यो में रूचि है, जो शुद्ध है और वेदों के अध्ययन में पारंगत है– वह वैश्य है। वह जो हर प्रकार के भोजन का व्यसनी, सभी कार्य करता है, जो अस्वच्छ है, जिसने वेदों का परित्याग कर दिया है, जो पवित्र कर्म नहीं करता, परम्परा से शूद्र कहलाता है और यह (जो मैंने बताया) शूद्र के लक्षण हैं और यह एक ब्राह्मण में नहीं मिलते। (ऐसा) शूद्र शूद्र की रहेगा जो ब्राह्मण (ऐसा करता है) ब्राह्मण नहीं होगा।

एक स्थान को छोड़कर अन्यत्र महाभारत वर्ण–व्यवस्था की वैदिक उत्पत्ति का समर्थन नहीं करता।

## V

आइये अब यह देखें कि वर्ण–व्यवस्था के संबंध में पुराण क्या कहते हैं?

हम विष्णु पुराण से आरम्भ करते हैं। चार वर्णों की उत्पत्ति पर विष्णु पुराण में तीन सिद्धांत हैं। एक में यह आरोप मनु के सिर जाता है। विष्णु पुराण का मत है:

''ऐहिक अण्डज से पूर्व देव ब्रह्मा हिरण्यगर्भ, विश्व के शाश्वत नियंता, जो ब्रह्मा के तत्वरूप थे, जिसमें दिव्य विष्णु सन्निहित थे, जो ऋक, यजुस, साम और अथर्ववेद के रूप में जाने जाते हैं, विद्यमान थे। ब्रह्मा के दाएं अंगूठे से प्रजापति दक्ष उत्पन्न हुए, दक्ष की पुत्री अदिति थी, उससे वैवस्वत उत्पन्न हुआ, उससे मनु प्रकट हुआ। मनु के पुत्र थे इक्ष्वाकु, नृग, धृष्ट, शर्याति, नरिष्यन्त, प्रमसु, नाभागनिदिष्ट, करूष और पृषघ्र। करूष से करूषगण महाशक्तिवान क्षत्रिय उत्पन्न हुए। निदिष्टा का पुत्र नाभाग वैश्य बना।''

यह व्याख्या अपूर्ण है। इसमें मात्र क्षत्रिय और वैश्यों की उत्पत्ति बताई गई है। उसमें ब्राह्मण और शूद्र की उत्पत्ति की कोई व्याख्या नहीं है। विष्णु पुराण में एक और भिन्न कथन है। उसके अनुसार:

''पुत्र कामना में मनु ने मित्र और वरूण की आहुति दी किन्तु होत्री पुजारी द्वारा मंत्र के गलत उच्चारण कर दिए जाने पर एक पुत्री उत्पन्न हुई। उसका नाम इला था। तब मित्र और वरूण की कृपा से मनु से उसे सुद्युम्प नामक पुत्र का जन्म हुआ। परन्तु महादेव के कोप के कारण वह भी नारी रूप में परिवर्तित हो गया। वह नारी सोम पुत्र बुध के आश्रम के निकट विचरती रही। बुध उस पर आसक्त हो गया और उन दोनों से एक पुत्र उत्पन्न हुआ–पुरूरवा। जन्म के उपरान्त उस देवता की जो ऋक, यजुस, साम और अर्थवेद मानस आहुति से उत्पन्न हुआ, जो यज्ञ–पुरूष का रूप है उसकी ऋषियों ने पूजा की जिन का मनोरथ था कि सुद्युम्न अपना पुरूषत्व पुनः प्राप्त कर लें। देवताओं की कृपा से इला फिर सुद्युम्न बन गया।

''विष्णु पुराण के अनुसार अत्रि ब्रह्मा का पुत्र और सोम का पिता था, जिसे ब्रह्मा के पादपों ब्राह्मणों और तारों का स्वामी बनाया। राजसूय यज्ञ के पश्चात सोम मदांध हो गया और देवताओं के गुरू बृहस्पति की पत्नी तारा का अपहरण कर के ले गया, जिसके लिए उसकी भर्त्सना की गई। ब्रह्मा, देवताओं और ऋषियों ने बृहस्पति की पत्नी लौटाने का अनुनय–विनय भी की। किन्तु उसने उसे नहीं लौटाया। सोम का पक्ष उष्ण–गण ने लिया जबकि अंगिरस के शिष्य रूद्र ने बृहस्पति की सहायता की। दोनों ओर से घमासान युद्ध हुआ जिसमें देवता और दैत्यों ने क्रमशः दोनों पक्षों में युद्ध किया। ब्रह्मा बीच में पड़े और सोम को विवश किया कि यह बृहस्पति को उसकी पत्नी लौटा दें। इस बीच वह गर्भवती हो गई और एक पुत्र बुध को जन्म दिया। बहुत अनुरोध करने पर उसने स्वीकार कर लिया कि सोम ही बुध का पिता है। जैसा कि पहले बताया जा चुका है, पुरूरवा मनु की पुत्री इला और बुध का पुत्र था।

''पुरूरवा के छह पुत्र थे। उनसे ज्येष्ठतम अयुस था। अयुस के पांच पुत्र थे। नहुष, क्षत्रवृद्ध, रम्भ, रजि, अनेनस।''

''क्षत्रवृद्ध का पुत्र था सुनहोत्र जिसके तीन पुत्र कास, लेस और गृत्समद थे। अंतिम पुत्र से शौनक उत्पन्न हुआ जिसने चार वर्ण बनाए। कास का एक पुत्र था कासिराज, उसका भी पुत्र था दीर्घतमस क्योंकि धन्वंतरि दीर्घतमस था।

तीसरे कथन के अनुसार वर्ण–व्यवस्था के जनक ब्रह्मा थे। वह इस प्रकार के:

नेत्रेय कहते हैं: तुमने मुझे मानव–सृष्टि के संबंध में बताया, अब हे ब्राह्मण! मुझे विस्तार से बताओ कि ब्रह्मा ने इसकी सृष्टि किस प्रकार की? मुझे बताओ, उसने कैसे और किस गुण से वर्ण बनाए और ब्राह्मण तथा अन्य के कार्य कौन–कौन से हैं? पराशर सत्व होता है वे उनके मुख से उत्पन्न हुए, 4. जिनमें रजोगुण होता है? वे उसके वक्ष से जन्मे, जिनमें रजोगुण और तमोगुण होता है, वे उनकी जंघाओं से जन्मे। अन्य उनके चरणों से उत्पन्न हुए जिनके मुख्य लक्षण हैं कलुष। इसरो वर्ण–व्यवस्था बनी, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र, जो क्रमशः मुख, वक्ष, जंघा और चरणों से बने हैं।''

विष्णु पुराण में ऋग्वैदिक सिद्धांत को सांख्य दर्शन का अनुमोदन प्राप्त है।

हरिवंश पुराणं में दो सिद्धांत आते हैं। एक के अनुसार वर्णों की उत्पत्ति मनु की एक संतान से हुई:

गृत्समद का पुत्र शुनक था, उससे शौनक ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र उत्पन्न हुए।

''विताठ पांच पुत्रों के पिता थे। वे थे सुहोत्र, सुहोत्री, गया, गर्ग और कपिल। सुहोत्र के दो पुत्र थे, कासक और राजा गृत्समति। उसके पुत्र ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य और प्रजापति दक्ष बन गए। यह इस प्रकार है:

'जनमेजय कहता है: ''हे ब्राह्मण, मैंने ब्रह्मयुग (वर्णन) सुना है जो आदि युग था। मेरी भी कामना है क्षत्रिय युग के विषय में सारगर्भित और विस्तार से अनेक प्रेक्षणों के आधार यज्ञ के सोदाहरण उल्लेख का सम्पूर्ण विवरण दें। वैशपायन ने उत्तर दिया, मैं उस युग के विषय में बताता हूँ जिसका यज्ञों के कारण आदर है और जो मुक्ति में अनेक कर्मों की विशिष्टता से सम्पन्न है, जिसका आदर तब के मनुष्यों के कारण किया जाता है। मुक्ति के लिए अबाध कर्म किए जाते थे। ब्रह्म के प्रति चित्त की एकाग्रता थी और संयम था। ब्राह्मणों के उद्देश्य महानतम थे। ब्राह्मण अपने व्यवहार से गौरवान्वित और मर्यादित थे। संयम का जीवन व्यतीत करते थे। ब्राह्मणों के अनुसार अनुशासन था, वे अपने कर्तव्यपालन में त्रुटिहीन थे। उनका ज्ञान अथाह था। वे मननशील थे। तब सहस्रों युग व्यतीत होने पर ब्राह्मणों की सत्ता शिखर पर थी। तब ये मुनि इस विश्व के विलयन में सम्मिलित हुए। ब्रह्मा से विष्णु प्रकट हुए। इन्द्रिय ज्ञान से परे हो गए और ध्यानस्थित हो गए। दक्ष प्रजापति बन गए और अनके प्राणियों की सृष्टि की। ब्राह्मण को रूपराशि (चन्द्रमा को प्रिय) और अक्षय बनाया गया। क्षत्रियों को नश्वर तत्वों से रंचा। एकांतरण से वैश्य बने और धूम्र परिष्करण से शूद्रों को बनाया गया। जब विष्णु वर्णों पर विचार कर रहे थे तो ब्राह्मण को गौर, लाल, पीत तथा नीले रंग से बनाया गया। इस प्रकार विश्व में मानव वर्णों में विभाजित हो गये। उनकी चार पहचान हुई, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। एक स्वरूप अनेक कार्य। दो पैरों पर चलने वाला अत्यंत आश्चर्यजनक शक्तिमान और अपने व्यवसाय में पारंगत। तीन उच्च वर्णों के संस्कारों का वेदों में निर्धारण हुआ। प्राणियों की योगावस्था से ब्रह्मा प्रकट हुए। विष्णु जैसी उसी ध्यानावसथा से भगवान प्रचेतस (दक्ष) अर्थात महान योगी विरूणु अपनी मेधा एवं ऊर्जा से ध्यानावस्था से कर्मक्षेत्र में उतरे। उन्मूलन से शूद्र उपजे, वे संस्कार रहित हैं इस कारण वे शुद्धि संस्कारो में सम्मिलित नहीं हो सकते, न पवित्र विज्ञान से उनका संबंध है, वैसे ही जैसे ईधन के घर्षण से अग्नि उत्पन्न होती है और लुप्त हो जाती है। उसकी यज्ञ से कोई आवश्यकता नहीं। इसी प्रकार धरती पर घूमने वाले शूद्र हैं। कुल मिलाकर (बलि देने के अतिरिक्त किसी उपयोग के नहीं)। अपने जन्म के कारण, उनका जीवन शुद्धता से वंचित रखा गया है और उनकी अनावश्यकता वेदों में नियत है।''

भागवत पुराण में भी वर्णों की उत्पत्ति की व्याख्या है। इसका कथन है :

''कई सहस्र वर्षों के उपरांत अपने कर्मो और प्राकृतिक गुणों से विद्यमान आत्मा ने जल पर उतराते अण्डज को जीवरूप प्रदान किया। फिर पुरूष ने उसका विखण्डन कर उससे एक सहस्र जंघाएं, चरण, भुजाएं, चक्षु, मुख और शीर्ष प्रकट किए। विश्व व्यवस्थापक ने अपने सहयोगी ऋषियों के साथ विश्व की रचना की। उन्होंने अपनी कटि से सात अधो भुवन रचे और ऊर्ध्व मूल से और सात उर्ध्व भुवनों की रचना की। ब्राह्मण पुरूष का मुख था, क्षत्रिय उसकी भुजाएं, वैश्य उसकी जंघाओं से उपजे और शूद्र उस देव पुरूष के चरणों से जन्मे। पृथ्वी उनके पैरों से बनी, वायु उनकी नाभि से। उनके हृदय से स्वर्ग और उनके वक्ष से महालोग बने।

अब अंत में वायु पुराण देखें। यह क्या कहता है? इसके अनुसार मनु ने वर्ण–व्यवस्था रची।

गृत्समद का पुत्र शुनक था। उससे शौनक जन्मा। उसी के परिपार में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र उत्पन्न हुए द्विज मानव विभिन्न कर्मो के साथ जन्मे।

## VI

कैसी अव्यवस्था है? ब्राह्मण चार वर्णों की उत्पत्ति के विषय में एकरूपता और ठोस प्रमाण क्यों नहीं प्रस्तुत करते?

वर्णों की सृष्टि के विषय में एकमत नहीं है। ऋग्वेद का कथन है कि चार वर्ण प्रजापति ने बनाएं। वह यह नहीं बताता कि कौन से प्रजापति ने। हम यह जानना चाहते हैं कि किस प्रजापति ने वर्ण बनाए क्योंकि प्रजापति अनेक हैं। यह मान भी लें कि प्रजापति ने बनाए तो भी सहमति नहीं है। एक का कहना है कि ब्रह्मा ने बनाए, दूसरे का मत है कश्यप ने। तीसरे का विचार है मनु ने बनाए।

इस प्रश्न पर कि सृष्टा ने– जो भी वह रहा हो, कितने वर्ण बनाए, जिनमें समानता नहीं। ऋग्वेद के अनुसार वर्ण चार थे। परन्तु अन्य अधिकारी विद्वान कहते हैं केवल दो वर्ण बनाए गए। कुछ का विचार है ब्राह्मण और क्षत्रिय और कुछ मानते हैं ब्राह्मण और शूद्र।

संबंधों के विषय में, सृष्टा के मनोरथ के प्रश्न पर ऋग्वेद ने चारों वर्णों में एक के बाद एक असमानाओं का नियम निर्धारित किया है जो वर्ण विशेष के उद्गम अंग के महत्व के अनुसार श्रेष्ठ या हीन है। जबकि श्वेत यजुर्वेद, ऋग्वेद के सिद्धांत से सहमत नहीं। ऐसे ही उपनिषद, रामायण, महाभारत और पुराण भी कहते हैं, किन्तु हरिवंश पुराण विस्तार से बताता है कि शूद्र द्विज है।

ऐसा लगता है कि इस कुटिलता का कारण चातुर्वर्ण्य की कहानी को सनातन रूप देना है जिसे ब्राह्मणों ने स्थापित परम्पराओं के विपरीत ऋग्वेद से जोड़ दिया।

उद्देश्य क्या था? ब्राह्मणों का इस सिद्धांत रचना के पीछे क्या प्रयोजन था?

**साभार :**
**बाबासाहेब डॉ. अम्बेडकर**
**सम्पूर्ण वाङ्मय खण्ड–8**
**पेज संख्या 194 से 207 तक**
**डॉ. बी. आर. अम्बेडकर**

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और दबायें।

# संघर्ष के बगैर सत्ता नहीं मिलती

कांशीराम

**(वाराणसी)**

**उत्तर प्रदेश वाराणसी कमिश्नरी में 23 सितम्बर 1984 को बहुजन समाज पार्टी की एक जनसभा का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि के रूप से बोलते हुये पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष मा. काशीराम ने कहा –**

आजाद भारत में बहुजन समाज गुलाम और लाचार क्यों है, इस विषय पर विचार करने के लिए आज हम बी. एस.पी. द्वारा आयोजित सभा में आपको कुछ कहने के लिए उपस्थित हुये हैं, लेकिन इसके पहले बामसेफ व डी–एस4 के विषय में कुछ कहना अत्यन्त आवश्यक समझता हूँ। बामसेफ हमारे सम्पूर्ण संगठन की जड़ है, साथ ही साथ सम्पूर्ण आन्दोलन की जड़ है, जिसमें शिक्षित कर्मचारी समय, पैसा और हुनर देकर दलित–शोषित समाज को जागृत कर रहे हैं। इस प्रकार बामसेफ एक जेनरेटर संगठन है। हमारा समाज बहुत बड़ा समाज है। हमारा जितना समाज है बामसेफ को उतना ही बड़ा जेनरेटर बनना चाहिए। क्योंकि बामसेफ सम्पूर्ण संगठन एवं आन्दोलन की जड़ है, साथ ही साथ डी–एस4 के बारे में बताना आवश्यक इसलिए है क्योंकि डी–एस4 को हमने संघर्ष के लिए तैयार किया है, क्योंकि बिना संघर्ष राजसत्ता प्राप्त नहीं की जा सकती है। जैसा आप सबको पता है कि 6 दिसम्बर, 1983 से 15 मार्च 1984 तक डी–एस4 ने सम्पूर्ण भारत में संघर्ष के माध्यम से दलित समाज को उसकी गुलामी का एहसास कराया और जन–जागृति पैदा की। डी–एस4 सामाजिक संघर्ष के लिये एक संगठन है।

जिन संगठनों की गैर–राजनीतिक जड़े मजबूत नहीं होतीं वे राजनीतिक संघर्ष नहीं कर सकते, यही कारण है कि सदियों से हमारे बुजुर्गो ने इस दिशा में काफी प्रयास किया। 1850 में महात्मा जोतिराव फुले ने समाज को शिक्षित बनाने का प्रयास किया, बाद में चलकर बाबा साहब डा. अम्बेडकर एवं पेरियार ने जनजागृति पैदा की एवं जन आन्दोलन करते रहे। हमें अपने बुजुर्गों के किये हुये कार्यों से सबक लेकर आगे कार्य करना है। अपने पूरे इतिहास को ध्यान में रखते हुये ही हमने बामसेफ बनाया। बामसेफ ब्रेन बैंक है इसलिए इसे बनाने में हमने अधिक समय लगाया। इसके बाद संघर्ष की आवश्यकता महसूस करते हुए 6 दिसम्बर 1981 को डी–एस4 नाम की संस्था बनायी। आज जबकि हमें बी.एस.पी. के विषय में आपसे कुछ कहना है लेकिन हमने बामसेफ एवं डी–एस4 का जिकर किया कि ये दोनों संगठनों की अब जरूरत नहीं है और बी.एस.पी. ही बहुजन समाज को मंजिल–ए–मकसूद तक पहुँचाने में सक्षम है। हमें बामसेफ को और मजबूत बनाना है। 14 अप्रैल1984 को बी.एस.पी. बनाकर हम इतने थोड़े अर्से मे जो कुछ कर पाये हैं उसका श्रेय बामसेफ और डी–एस4 को ही है। इसीलिए मैं आप सबसे गुजारिश करूँगा कि समय की गति के साथ–साथ बामसेफ की गतिविधियों में और तेजी लानी पड़ेगी।

किसी भी काम के लिए सोच शुरू होना आवश्यक है तभी उपाय ढूँढा जा सकता है और उसकी तैयारी की जा सकती है। हम अपने साथियों से कहेंगे कि हमारे लोग तैयार बैठे हैं तो उन्हें जल्दी–जल्दी तैयार हो जाना चाहिए। आप जानते हैं कि इस देश मे बहुत सी राजनैतिक पार्टियाँ हैं। इसके बावजूद हमें एक नई पार्टी बनाने की क्यों जरूरत पड़ी? क्योंकि ये सभी पार्टियाँ ब्राह्मण, बनिया और जमींदारों की पार्टियाँ हैं और हमारे लोग इसमें मजदूर जैसे काम कर रहे हैं। यह मजदूर छोटे नहीं बल्कि बड़े पैमाने पर एम.पी., एम.एल.ए. एवं मिनिस्टर के स्तर तक चमचागिरी करके हमारे समाज का अहित कर रहे है। हमारा हिस्सा देने को कोई तैयार नहीं है इसलिए हमें अपने हिस्से को लेने के लिए अपने आपको तैयार करना है और अपने हक को ले लेना है, इसलिए हमें बहुजन समाज के लिए बी.एस.पी. नामक पार्टी बनाने की आवश्यकता पड़ी। हमारे लोगों को 6 हजार जाति–उपजातियों में बांटा गया है। इस प्रकार हम 85 प्रतिशत होते हुये भी जातिय विभाजन के कारण अल्पसंख्यक कहे जाते हैं। जिस तरह से समाज को टुकड़े–टुकड़े में बांटा गया है, हमें इन टुकड़ों को एक जगह इकट्ठा करना है, अब तक हम हजार टुकड़ों को एक जगह एकत्रित कर पाये हैं और आने वाले समय में सभी को एक जगह एकत्रित करना है।

आज कोई भी आदमी भाईचारा, समानता के खिलाफ नहीं है लेकिन हमें कोई समानता और भाईचारे के रूप में खड़ा नहीं होने दे रहा है। जब हम आपस में भाईचारा पैदा कर लेंगे तो हमारा दुश्मन स्वयं मैदान छोड़कर भाग जायेगा। गुलाम लोगों की एक विशेषता यह होती है कि वे अपने ही विषय में सोचते हैं, समाज के विषय में नहीं। जैसा कि बाबा साहब डा. अम्बेडकर ने कहा कि ''गुलामों को गुलामी का अहसास करादो फिर वे गुलामी की जंजीरें स्वयं तोड़ देंगे।'' अतः हमें लोगों को एहसास करना है। अंग्रेज चले गये लेकिन केवल सत्ता का हस्तान्तरण हुआ और हम फिर गुलाम के भी गुलाम रह गये। इस तरह से हम 37 साल की आजादी के बाद आज भी गुलाम और लाचार हैं तथा इस देश में प्रजातंत्र होते हुये भी गरीबों के वोट अमीरों के नोट से खरीदे जाते हैं। आज सभी गुलाम और लाचार लोगों को बड़े पैमाने पर सोचना है तथा अपनी तैयारी करके समता, स्वतंत्रता, बंधुत्व एवं न्याय पर आधारित समाज एवं व्यवस्था की रचना करती है।

सभा में गदपति राम (पूर्व सांसद, जौनपुर), गजराज सिंह यादव, प्रो. राजदेव पटेल व गाजीपुर से कु० बी० अग्रहरी, प्रेम प्रकाश भारती, मिर्जापुर से बलवन्त सिंह कुशवाहा एवं श्री राम गुलाब सिंह यादव ने अपने विचार व्यक्त किये। रामकृष्ण आचार्य ने वाराणसी यूनिट की तरफ से मा. कांशीराम के वजन के बराबर 12 हजार रूपया भेंट किया।

सभा का संचालन राम जवम वियार ने किया। सभा में 50 हजार लोग उपस्थित रहे। (बहुजन संगठक, वर्ष 5,

**साभार :**

**मा. कांशीराम साहब के ऐतिहासिक भाषण खण्ड–3**

**पेज संख्या 88 से 90 तक। ए.आर.अकेला**

# कोड़ार्क का सूर्य मन्दिर

उड़ीसा के कोड़ार्क का सूर्य मन्दिर एक विशाल मन्दिर है। सूर्य 24 पहियों वाले 7 घोड़ों के रथ पर सवार होकर साल में एक दिन की यात्रा के लिए निकलते हैं। यह मन्दिर हिन्दू राजा नरसिंह देव ने बनवाया था। 11वीं सदी के इस मन्दिर में 12 वर्ष की सम्पूर्ण राज्य की आय जो जनता की गाढ़ी कमाई थी, की लागत से बनाया गया था और राज्य का सारा खजाना लगा दिया गया था। इसमें 12 सौ शिल्पी और 12 हजार मजदूर प्रतिदिन काम करते हुए 12 वर्ष निर्माण में लगे थे। हिन्दू वैभव और विलासिता का प्रतीक यह मन्दिर करोड़ों बेजुवान भूखे पेट इंसानों के पसीने की कहानी कहता है दूसरी और कूर विलासी और अत्याचारी हिन्दू राजाओं की हैवानियत की तस्वीर प्रस्तुत करता है। आज इस मन्दिर की सम्पूर्ण सम्पत्ति का मूल्य सौ करोड़ रूपए होगा। सैकड़ों वाहन, सैकड़ों दुकाने, सैकड़ों उद्योग, हजारों एकड़ भूमि, सोने, चांदी के खम्बे आभूषण और जवाहरात इस मन्दिर की सम्पत्ति है। इस मन्दिर की कुल आय से उड़ीसा राज्य की पंचवर्षीय योजना चल सकती है।

इस मन्दिर के हजारों नाई, पण्डे और कामगार है जिनकी जीविका मन्दिर से चलती है। जुआ, मदिरा, होटल, तस्करी इन मन्दिर के सहारे चलने वाले व्यापार है। दस हजार की पण्डों की जनसंख्या इसी से पलती है।

इस मन्दिर की दीवारों पर बनी कामुक मुद्राओं की अनेकों प्रतिमाओं के संभोग के आसनों की आकृतियों को यह प्रदर्शित करती है कि राजसी शासन का वैभव विलासिता का वासना में डूबा रहता था और उस काल का पुजारी पण्डा ब्राह्मण इस वासना में राजा प्रजा और स्वंय को डुबोए रखता था। वासना ही धर्म था। धर्म के नाम पर नृत्य होते थे, धर्म के नाम पर वासना तृप्ति होती थी धर्म के नाम पर जाम पान होता था, धर्म के नाम पर हत्याएँ होती थीं। धर्म के नाम पर जीवन कांपता था। ब्राह्मण का चाबुक राजा प्रजा सब पर पड़ता था। जनजीवन विलासिता और अंधविश्वास के अंधकार में डूबा हुआ था।

बंगाल की खाड़ी के किनारे यह मन्दिर देशी और विदेशी हजारों यात्रियों का पर्यटन स्थल है। एक तरफ मन्दिर का कोलाहल है तो पास में ही समुद्र की लहरों से किनारों पर रंगीन वासना रात भर जिस्म का व्यापार करती है।

इस मन्दिर की आय औसतन दो लाख रूपया प्रतिदिन होती है। इस मन्दिर में इतनी देवी देवताओं की मूर्तियां हैं कि इनका गिर सकना कठिन है। पत्थर का रथ और पत्थर की खुदी यह मूर्तियां और फूल पत्ती इतनी कला का नहीं जितनी विलासिता, वासना और कामुकता का प्रतीक है। दीवारों पर कमल, सर्पों के जोड़े, फूल, लताओं, हाथियों एवं जंगली पशुओं के झुण्ड कीड़ा करते पक्षी, खेलते हुए बंदर आदि की मूर्तियां हैं। अप्सराओं और कलाओं की विभिन्न मुद्रा के बनी मूर्तियां नारी सौन्दर्य का प्रदर्शन करती हैं। यहां बनी नृत्य कक्ष में नंगी नृत्यांगनाओं की मूर्तियां अश्लीलता की पराकाण्ठा है। चुम्बन, गाढ़ालिंगन कुचमर्दन, और भोगाकृति में भी मूर्तियां हैं। सैकड़ों यात्री इन मूर्तियों की अश्लीलता के रूप को न देखते हुए निगाह नीचे किए मन्दिर में प्रवेश कर जाते हैं।

इस मन्दिर के निकट के होटलों में 5 रूपए से 100 रूपया तक रात युवा स्त्री मिलती है। पण्डों ने अपने टूरिस्ट गृह खोल रखे हैं। जहां यात्रियों को स्वयं टिकाते और सुरा सुन्दरी उपलब्ध कराते हैं।

जनता के गाढ़े परिश्रम का इन मन्दिरों में लगा धन यदि देश का धन बन जाय तो हम अमरीका से भी धनी हो जाये।

इस मन्दिर में दस हजार भिखारियों की भीड़ है। यात्री जब मन्दिर में जाता है जो भिखारी कतार में बैठे 5 पैसे के लिए हाथ फैलाता है। इन्हे देखकर एक विचित्र संसार नजर आता है। मन्दिर को अंदर वैभव सोने के सिंहासन और बाहर तबाही है। मन्दिर को लंगर में हजारों ब्राह्मणों के लिए भोजन बनता, दूध खौलता और भगवान के नाम पर 16 मेवों का भोजन बनता है। वही मन्दिर के बाहर भिखारी भूख से दम तोड़ देता है। धर्म के ठेकेदार ब्राह्मण पुजारी वर्ग की निर्दयता का यह नग्न दृश्य रोज देखने को मिलता है। यहां के गाँव–गाँव में पत्थरों की मूर्तियां गढ़ी जाती हैं जो बाजार में बिकती हैं।

धर्म के धंधेगीर मालाएं और मूर्तियां बेचते और हजारों की संख्या में व्यापार से लगे हैं। ये सभी ब्राह्मण हैं। मन्दिर के सहारे सरकारी और गैर सरकारी सैकड़ों देशी, विदेशी शराब के अड्डे हैं। यह गैर सरकारी अड्डे अनेक पुजारी चलाते हैं और शराब के सहारे लाखों का धंधा करते हैं। यहां चोर, जेबकट, ठग, लुटेरे सैकड़ों की संख्या में घूमते हैं जिनका पण्डों और पुलिस से सीधा संबंध होता है। जो इन अपराधियों में दलाली खाते हैं। मन्दिर की आय गाइडों से भी होती है। गाइड एक व्यवसाय हैं जो पण्डों से संबंध रखता है। यात्री को मिटा देता है और पण्डे जैसे लेता है। पण्डा अपने घरों में फँसाकर एवं सुरा कन्याएं पेशकर यात्री को लूट लेता है। बेचारे यात्री हाथ मलता घर चला जाता है।

**साभार : हिन्दुओं के वृत, पर्व और त्यौहार**
**पेज संख्या 218 से 220**
**एस. एल. सागर**

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और दबायें।

# यहाँ का ब्राह्मणवाद किसी अन्य वाद को चलने ही नहीं देता।–कांशीराम

**(जबलपुर)**

बहुजन समाज पार्टी जबलपुर की बड़ी ही सराहनीय भूमिका 18 सितम्बर 1984 को समय देखने को मिली जब पार्टी के संस्थापक राष्ट्रीय अध्यक्ष कांशीराम जी को देखने और सुनने के लिए जबलपुर जिला ही नहीं बल्कि महाकौशल रीजन के लगभग सभी जिलों से जनसाधारण विशाल संख्या में उपस्थित हुआ। कांशीराम जी के मंच पर पहुँचते ही कांशीराम जिन्दाबाद, कांशीराम संघर्ष करो हम तुम्हारे साथ है, बी.एस.पी. की टक्कर में, इन्दिरा फंस गई चक्कर में, आदि नारों से वातावरण गूँज उठा।

मा. कांशीराम जी ने जनसमुदाय को सम्बोधित करते हुए बताया कि जबलपुर की इस जनसभा में मैं भले ही राजनीति की बातें बोलने के लिए उपस्थित हुआ हूँ लेकिन मैं आप सबके बीच इसके पहले भी कई बार आ चुका हूँ, आप सबसे परिचित हूँ मैं आप सबके विचार सुन चुका हूँ और अपने भी विचार पहले दे चुका हूँ लेकिन आज इस मौके पर बहुजन समाज पार्टी के जरिये यह बतलाना चाहूँगा कि दलित–शोषित लोगों की 95 प्रतिशत आबादी के आधार पर जो हमारी पार्टी बनी है उसके एक विषय को लेकर मुझे यहाँ बोलने का मौका मिला है और मैं जो बोल रहा हूँ वह पूरे देश में फैल चुका है। आज हम 60–65 प्रतिशत हैं। मैं आपके फैक्ट्री कर्मचारियों की भीड़ भी देखकर उससे बहुत कुछ सीखने की कोशिश कर रहा हूँ। इस जबलपुर में 60–70 हजार कर्मचारियों की विशाल शक्ति से आप बामसेफ के माध्यम से अच्छी तरह जुड़ सकते हैं। लेकिन मैं यह नहीं समझ पा रहा हूँ कि वे जुड़ क्यों नहीं रहे हैं। इसके उत्तर में मुझे जो जानकारी मिली है वह यह है कि उनकी समस्यायें अभी बामसेफ हल नहीं कर पाती इसलिये वे इससे जुड़ते भी नहीं। परन्तु पढ़े–लिखे कर्मचारी भी जब अपनी समस्यायें अभी तक हल नहीं कर पाये तो इसका कारण क्या है? जहाँ तक मैं समझता हूँ वह यह है कि जब अभी तक पढ़े–लिखे लोगों के इतने बड़े वर्ग की समस्यायें नहीं हल हो पाई तो हमें यह निश्चित मानना चाहिए कि इसके पीछे राजनीति है और कर्मचारियों को अपनी समस्यायें हल करनी हो तो उन्हें राजनीति को अच्छी तरह समझना चाहिए। और उन्हें ''पे–बैक टू दि सोसायटी' के लिए कुछ करना चाहिए। और जब शेष इस समाज को बहुत कुछ मिलने लगेगा तो उनकी भी समस्यायें अपने आप हल हो जायेंगी।

मा. कांशीराम जी ने बतलाया कि यह बहुजन समाज पाटी का पहला कार्यक्रम है। आप सोचते होंगे कि यह पार्टी ही क्यों बनी है तो मैं बतला दूँ कि हमारी समस्याओं का मुख्य कारण इस देश में तमाम पार्टियों का होना है। ईरान, अमेरिका, कनाडा आदि देशों में इतनी ज्यादा पार्टियाँ नहीं हैं। वहाँ केवल दो टक्कर की पार्टियाँ हैं और जब बराबर प्रतिद्विदंता की पार्टियाँ होती हैं तो वहाँ की सत्ता में बैठे हुये लोग अच्छे ढंग से काम करते हैं और लोकशाही भारत में तो अत्यन्त जरूरी है। मगर विडंबना यह है कि यहाँ का ब्राह्मणवाद किसी अन्य 'वाद' को चलने ही नहीं देता। इसीलिए साम्यवाद को चलाने के लिए बाबा साहब ने एक मार्मिक बात कही थी कि या तो रसियन लोग यह नहीं जानते कि भारत में साम्यवाद फले–फूले अन्यथा वे इनी–गिनी संख्या में ब्राह्मण के लड़कों को इस महान कार्य में नहीं लगाते।

आप देख रहे हैं कि इस देश में सारी की सारी पार्टियाँ ब्राह्मणों के हाथों में हैं। एक व्यक्ति एक वोट के रहते देश की संसद में ब्राह्मण जाति के 60 प्रतिशत सदस्य हैं परन्तु जिनकी 52 प्रतिशत आबादी है और 52 प्रतिशत वोट हैं उनके केवल 8 प्रतिशत सदस्य हैं। देश की आर्थिक सत्ता भी 15 प्रतिशत बनियों के हाथ में है, आधुनिक संविधान के अनुसार यह तो नहीं होना चाहिए परन्तु ब्राह्मणवाद को जिन्दा रखने के लिए देश में ब्राह्मणों की पार्टियाँ हैं। आज खुशी है कि आप सभी लोग अन्जान नहीं रह गये हैं। लेकिन विडंबना यह है कि आप लोग अपने साथ किये गये धोखे को नहीं समझ रहे हैं। इसीलिए पहले बामसेफ, फिर डी–एस 4 और अब बहुजन समाज पार्टी के माध्यम से जो भी प्रयास किये गये हैं वे देश में मतभेद और दुश्मनी पैदा करने के लिए नहीं बल्कि इस देश की 6 हजार जातियों के टुकड़ों को एकत्र करके उनमें प्रेम और सदभावना पैदा करने के लिए हैं। यही कारण है कि आप लोग इतनी संख्या में अपने साधनों से चलकर इकट्ठे हुये हैं।

आप पिछड़े वर्गो की बात लीजिए, उनके नेता लोग एम.पी. के टिकट ढूंढते–ढूंढते रेलवे की सैर–सपाटी के लिए ही टिकट पर टूट जाते हैं और कभी–कभी तो बस की टिकट पर खुश हो जाते हैं। मुसलमान भाईयों के ऊपर 365 दिनों में 400 बलबे होते हैं। इन लोगों ने तो कभी किसी से दुश्मनी नहीं की परन्तु इनके ऊपर दंगे होते हैं। मैं तो पूरे देश के विषय में बोलूँगा।

अभी–अभी 3–4–5 अगस्त को जनेबा में भारत की गुलामी के विषय में विचार किया गया। वहाँ घोषित किया गया कि भारत में 50 लाख बंधुआ मजदूर हैं तो क्यों? और भारत के राजदूत से इसके सम्बन्ध में जवाब तलब किया गया, कितना आश्चर्य है कि जो गुलाम हैं वे अपनी गुलामी के लिए नहीं सोचते, न ही हमारे कर्णधार लोग सोचते हैं लेकिन जिसे नहीं सोचना चाहिए वह हमारे

सेवा में,

नाम .....

पता .....

.....

.....

विषय में सोच रहा है।

उपरोक्त बातों को बाबा साहब बहुत अच्छी तरह जानते थे। इसीलिए उन्होंने कहा कि –गुलाम को उसकी गुलामी का अहसास करा दो, वह उठ खड़ा होगा और अपनी गुलामी की बेड़ियाँ स्वयं तोड़ देगा। '' हमारा भी कार्यक्रम पूरे देश में आज इसीलिए हो रहा है। 7–8 अक्टूबर तक हमारा इस श्रृंखला का समापन कार्यक्रम होगा। हमने अपने काम को पूरा करने के लिए तीन प्रकार के जेनरेटर तैयार किये हैं। जिनका नाम है–बामसेफ, डी–एस4 और बी.एस.पी.। मैं अपने सामने तमाम साईकिलें देख रहा हूँ। यह हमारा बहुत बड़ा साधन है, इस साधन का हमारे सामने कोई भी मुकाबला नहीं कर सकता। इसका उदाहरण भी है जब हमने 1983 में देशभर में साईकिल मार्च किया तो इन्दिरा कांग्रेस ने इसे बहुत बड़ा साधन मानकर जामा मस्जिद से सवा किलोमीटर तक की साइकिल यात्रा किया। काफी प्रचार–प्रसार हुआ लेकिन वे तो हमारे सामने फेल हो चुके हैं।

मा. कांशीराम ने बतलाया कि बाबा साहब ने हमारी गुलामी दूर करने के लिए एक सबसे अच्छा रास्ता ढूँढा था। उन्होंने 26 जनवरी 1950 को देश का संविधान सौंपते हुए कहा कि ''आज हम एक दुधारी तलवार की जिन्दगी में कदम रखने जा रहे हैं, वह यह है कि राजनीति में तो हमारे लिए बराबरी होगी, एक वोट होगा परन्तु आर्थिक और सामाजिक तौर पर असमानता ज्यों–की–त्यों बनी रहेगी और इसके बिना राजनैतिक समानता एक बेकार की वस्तु है।'' आज एक विचित्र खेल हो रहा है, अमीर के नोट से गरीब का वोट खरीदा जा रहा है और हम इसे समाप्त करने के लिए कमर कसकर मैदान में आ चुके हैं।

**जनसभा को विमला सौंधिया (रीवा), आदिवासी नेता गुलाब सिंह मड़ावी ने सम्बोधित किया।**

**साभार : मा. कांशीराम साहब के ऐतिहासिक भाषण खण्ड–3**
**पेज संख्या 84 से 87 तक**
**ए.आर.अकेला**

# मैसूर का महिसासुर

मैसूर में दशहरा का अवसर प्रसिद्ध है। यहाँ का प्रसिद्ध किला प्रसिद्ध दशहरा उत्सव पर हजारों दर्शकों का केन्द्र बन जाता है। यहाँ प्रसिद्ध मेला लगता है। यहां का किला सुन्दर तीर्थ स्थल है। यहाँ रत्नों का जड़ा हुआ सोने का सिंहासन दर्शनीय है जो प्राचीन राजाओं को विलासता की कहानी कहता है। यहाँ चामुन्डी पहाड़ी पर महिषासुर की विशाल मूर्ति है। देवी की एक मूर्ति है। लाखों यात्री यहाँ आता है और करोड़ों रूपया साल में इकट्ठा हो जाता है। यहाँ पांच मीटर लम्बीं नन्दी की विशाल मूर्ति है जो पहाड़ी पर बनी हुई है। यहाँ पर अन्य अनेकों मन्दिर हैं जहाँ बहुत बड़ा मेला लगता है। मेले में हजारों किस्म के पशु पक्षी इकट्ठे किए जाते हैं। और लाखों का व्यापार होता है। पशु पक्षियों की खरीद व बिक्री के कर का लाखों रूपया इकट्ठा होता है जो पन्डों के पेट में चला जाता है यहाँ एक वृन्दावन उद्यान विलासता और वासना को स्थली है। यहाँ पहुँचकर स्वप्न लोक दिखाई देता है। मैसूर से 35 कि. मी. दूर सोमनाथपुर में होयशाला प्रसिद्ध मन्दिर है जो यात्रियों के लिए प्रसिद्ध है यहाँ बहुत बड़ा मेला लगता है और करोड़ो रूपया एकत्रित होता है। जो निठल्लों के पेट में चला जाता है। यहां का प्रसिद्ध पक्षी बिहार विलासता और वासना का केन्द्र है।

रंग पट्टन कनटिक का एक शहर है जो टीपू और हैदरअली की राजधानी रहा है इसमें श्रीरंगनाथ स्वामी का विशाल मन्दिर है। यह एक विशाल मन्दिर है, लाखों की इसकी सम्पत्ति है। यहां प्रसिद्ध मेला लगता है। यह हिन्दुओं का तीर्थ स्थल है। यहाँ पर सैकड़ों पन्डे पलते हैं। लाखों रूपए की इसकी आय होती है। व्यभचार, विलासता, देवदासी प्रथा, चोरी भिक्षा, जेबकटी का प्रसिद्ध स्थल है। इस मन्दिर को आय से सैकड़ों पंडों के परिवार पलते हैं।

कर्नाटक का ही बैलूर का मन्दिर प्रसिद्ध है जिसमें चट्टानों पर तरासी गई मूर्ति दिखाई देती है। यह हिन्दुओं का प्रसिद्ध तीर्थ स्थल है। यहाँ मेला लगता है। इस मन्दिर का नाम 'चन्ना केसमा मन्दिर' है। जिसका निर्माण विष्णु वर्धन ने कराया था। इस मन्दिर पर पत्थर की नग्न मूर्तियां तरासी गई है जो वासना का नग्न चित्र प्रस्तुत करती है। शिव पार्वती सरस्वती की मूर्तियां वासना का स्वरूप है। हिन्दू संस्कृति के वासना का स्वरूप इन मन्दिरों की मूर्ति कला से झलकता है। कामी पुरूष आकर यहां अपनी वासना को तृप्त करता है। इस मन्दिर में सैकड़ों देवदासियां और पुजारनी यहां के यात्री, दर्शक, भक्त और मनचलों की वासना तृप्ति का साधन है। यहाँ मेले के अवसर पर खुला व्यभचार और पैसे का व्यापार होता है। इस मन्दिर में ग्रेनाइट पत्थर लगा हुआ है जो धार्मिक वैभव का और उपव्यय का प्रतीक है। इस मन्दिर में 18 खम्बे हैं। खम्बों पर सरस्वती और शीतला देवी की मूर्ति बनी हुई है। अन्य खम्भों पर मन्दिर की देवदासियों को दिखाया गया है यह मन्दिर विष्णुवर्धन ने बनवाया था, उसके पूर्ण हुआ तथा एक लाख मजदूर बनाने में लगा जो शूद्र जाति का था। उसकी सेवायें मुफ्त ली गई। आज इस मन्दिर में शूद्र प्रवेश वर्जित है। इस मन्दिर में लाखों का चढ़ावा आता है। हजारों ब्राह्मण पलता है। करोड़ों की इसकी सम्पत्ति है। यहां हर पर्व और त्योहारों पर मेला लगता है इस मन्दिर से करोड़ों रूपये की आय है जिससे ब्राह्मण परिवार पलते हैं। लाखों यात्री यहां प्रतिवर्ष आता है। जिनसे करोड़ों की आय होती है। यहाँ वार्षिक मेला लगता है।

**साभार : हिन्दुओं के वृत, पर्व और त्यौहार**
**पेज संख्या 187 से 189**
**एस. एल. सागर**

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और 🔔 दबायें।